चेरी की बगिया

चार अंकों का सुखांत नाटक

पात्र

रानेव्स्काया, ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना (ल्यूबा) – ज़मींदारिन
आन्या – उसकी १७ वर्षीया बेटी
वार्या – उसकी २४ वर्षीया दत्तक पुत्री
गायेव, लेओनीद अन्द्रेयेविच – रानेव्स्काया का भाई
लोपाख़िन, येर्मोलाई अलेक्सेयेविच – व्यापारी
त्रोफ़ीमोव, प्योत्र सेर्गेयेविच (पेत्या) – विद्यार्थी
सिमेओनोव-पीश्चिक, बोरीस बोरीसोविच - ज़मींदार
शर्लोत्ता इवानोव्ना – शिक्षिका
येपिख़ोदोव, सेम्योन पनतेलेयेविच – क्लर्क
दुन्याशा – नौकरानी
फ़ीर्स –८७ वर्षीय बूढ़ा अर्दली
याशा – नौजवान अर्दली
राहगीर
स्टेशन मास्टर
डाकख़ाने का कर्मचारी
मेहमान, नौकर-चाकर

(घटना-स्थल – रानेव्स्काया की जागीर)

पहला अंक

(कमरा, जिसे अभी तक बच्चों का कमरा कहा जाता है। उसका एक दरवाज़ा आन्या के कमरे की ओर है। जल्द ही सूरज निकल आयेगा। मई का महीना शुरू हो चुका है, चेरी के पेड़ों पर फूल आये हुए हैं, किन्तु बाग़ में ठण्ड है, सुबह का पाला पड़ रहा है। कमरे की खिड़कियां बन्द हैं।)

(दुन्याशा मोमबत्ती और लोपाख़िन हाथ में किताब लिये हुए आते हैं)

लोपाख़िन : शुक्र है भगवान का, गाड़ी आ गयी। क्या वक़्त हुआ है ?

दुन्याशा : जल्द ही दो बज जायेंगे। (**मोमबत्ती बुझा देती है**) उजाला हो गया है।

लोपाख़िन : कितनी देर से आई है गाड़ी ? ज़्यादा नहीं तो दो घण्टे तो ज़रूर ही। (**जम्हाई और अंगड़ाई लेता है**) मैं भी एक ही हज़रत हूं, ख़ासा उल्लू ! ख़ास तौर पर इसलिये यहां आया कि उन्हें स्टेशन पर लेने जाऊंगा और अचानक सोया ही रह गया ... बैठे-बैठे ही सो गया। कितनी बुरी बात है ... तुम ही मुझे जगा देतीं।

दुन्याशा : मैंने तो सोचा कि आप स्टेशन पर चले गये हैं। (**ध्यान से सुनती है**) लगता है कि वे आ रहे हैं।

लोपाख़िन (कान लगाकर सुनता है) : नहीं ... अभी तो उन्हें सामान लेने और इधर-उधर की झुटपुट बातों में वक़्त लगेगा ...

(ख़ामोशी)

पांच साल विदेश में बिताकर लौट रही हैं ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना। कौन जाने, अब वे कैसी हो गयी होंगी ... बहुत भली महिला हैं। अच्छे मिज़ाज की, सीधी-सादी। मुझे याद है कि जब मैं पन्द्रह साल का था तो मेरे स्वर्गीय पिता ने, जिनकी उस समय इस गांव में छोटी-सी दुकान थी, मेरे मुंह पर ज़ोर से घूंसा दे मारा था। मेरी नाक से ख़ून बहने लगा था ... हम दोनों उस वक़्त किसी काम से यहां अहाते में आये थे और पिता जी ख़ूब पिये हुए थे। मुझे यह ऐसे ही याद है, मानो कल की बात हो। ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना तब युवती ही थीं, बड़ी दुबली-पतली। वह मुझे यहां, इसी बच्चों के कमरे में मुंह धुलाने के लिये ले आयीं। बोलीं: "रो नहीं देहाती छोकरे, शादी के दिन तक तो ज़रूर तेरी नाक ठीक हो जायेगी ..."

(**ख़ामोशी**)

देहाती छोकरा ... यह सच है कि मेरे पिता ठेठ देहाती थे, लेकिन मैं सफ़ेद वास्कट और पीले, बढ़िया जूते पहने हूं। क्या ठाठ हैं मेरे ... बस, इतना ही है कि अमीर हूं, पैसे बहुत हैं, लेकिन अगर सोचा जाये, ज़रा गहराई में जाया जाये तो देहाती का देहाती ही हूं ... (**किताब के पन्ने उलटता है**) इस किताब को पढ़ रहा था और ख़ाक भी नहीं समझा। पढ़ते-पढ़ते ही सो गया।

(**ख़ामोशी**)

दुन्याशा: और कुत्ते रात भर नहीं सोये। महसूस करते हैं कि मालिक लोग आ रहे हैं।

लोपाख़िन: अरी दुन्याशा, यह तुम कैसी घबरायी-सी लग रही हो ...

दुन्याशा : मेरे हाथ कांप रहे हैं। मैं तो बेहोश हो जाऊंगी।

लोपाख़िन : बड़ी नाज़ुक हो तुम दुन्याशा। पहनती-ओढ़ती भी रईसज़ादियों की तरह और बाल भी उन्हीं की तरह बनाती हो। यह ठीक नहीं। आदमी को अपनी असलियत को नहीं भूलना चाहिये।

(गुलदस्ता लिये हुए येपिख़ोदोव आता है। वह कोट और घुटनों तक के बेहद चरमरानेवाले चमचमाते जूते पहने है। मंच पर आते हुए उसके हाथ से गुलदस्ता गिर जाता है)

येपिख़ोदोव (गुलदस्ता उठाता है) : यह माली ने भेजा है। उसका कहना है कि इसे खाने के कमरे में सजाया जाये। **(दुन्याशा को गुलदस्ता देता है)**

लोपाख़िन : और मेरे लिये क्वास * भी लेती आना।

दुन्याशा : जी, अच्छी बात है। **(जाती है)**

येपिख़ोदोव : अभी बड़ी ठंडक है, तीन डिग्री का पाला है, मगर चेरी के पेड़ों पर फूल ही फूल हैं। अपने यहां के जलवायु को मैं अच्छा नहीं कह सकता। **(आह भरकर)** हां, नहीं कह सकता। वह हमारी मदद नहीं करता। येर्मोलाई अलेक्सेयेविच, आप मुझे यह बताने की अनुमति दीजिये कि तीन दिन पहले मैंने अपने लिये ये जूते ख़रीदे थे और आपको यह विश्वास दिलाने का साहस कर सकता हूं कि ये ऐसे चरमराते हैं कि भगवान बचाये। कौन-सा तेल लगाऊं इनमें ?

लोपाख़िन : मेरा सिर नहीं खाओ। तुम्हारी वजह से नाक में दम है।

---

* कूटू की रोटी से बनाया जानेवाला ख़मीरी पेय जिसका ज़ायका कुछ हद तक कोका-कोला जैसा होता है। – अनु०

येपिख़ोदोव : मुझ पर तो हर दिन ही कोई न कोई मुसीबत आती रहती है। लेकिन मैं शिकवा-शिकायत नहीं करता, इसका आदी हो गया हूं, यहां तक कि मुस्कराता भी हूं।

(दुन्याशा आती है, लोपाख़िन को क्वास देती है)

तो मैं चलता हूं। **(कुर्सी से टकरा जाता है जो गिर जाती है)** यह लीजिये ... **(मानो कोई बड़ी जीत हासिल की हो)** देख रहे हैं न। ऐसा कहने के लिये माफ़ी चाहता हूं, लेकिन यह भी एक ऐसी ही घटना है ... वैसे, यह तो ख़ूब रही ! **(जाता है)**

दुन्याशा : येर्मोलाई अलेक्सेयेविच, आपको यह बाताऊं कि येपिख़ोदोव ने मुझसे शादी का प्रस्ताव किया है।

लोपाख़िन : सच !

दुन्याशा : समझ में नहीं आता कि मैं क्या फ़ैसला करूं ... आदमी तो वह बहुत भला है, लेकिन कभी-कभी जब बोलने लगता है तो कुछ भी हाथ-पल्ले नहीं पड़ता। बातें उसकी अच्छी होती हैं, मन को छूती हैं, मगर समझ में नहीं आतीं। मुझे भी वह मानो अच्छा ही लगता है और वह तो मेरे प्यार में पागल ही है। आदमी वह बदक़िस्मत है, हर दिन ही कोई न कोई बुरी बात होती रहती है उसके साथ। हमारे यहां सभी उसे 'नित नई मुसीबत' कहकर चिढ़ाते रहते हैं ...

लोपाख़िन (कान लगाकर सुनते हुए) : लगता है कि आ रहे हैं ...

दुन्याशा : आ रहे हैं ! मुझे यह क्या हो रहा है ... मेरे हाथ-पांव ठण्डे हुए जा रहे हैं।

लोपाख़िन : सचमुच आ रहे हैं। आओ, बाहर चलकर स्वागत करें। ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना मुझे पहचानेंगी या नहीं ? पांच साल हो गये मिले हुए।

दुन्याशा (अत्यधिक घबराहट से) : मैं तो अभी बेहोश होकर गिर जाऊंगी ... हाय, अभी गिर जाऊंगी !

(दो बग्घियों का घर के पास आना सुनाई देता है। लोपाखिन और दुन्याशा जल्दी से बाहर जाते हैं। मंच ख़ाली रह जाता है। बग़ल के कमरों में शोर-ग़ुल सुनाई देने लगता है। ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना का स्वागत करने के लिये स्टेशन पर जानेवाला फ़ीर्स अपनी छड़ी पर झुका हुआ तेज़ी से मंच पार करता है। वह पुराने ढंग की वर्दी और ऊंचा टोप पहने है, अपने आपसे कुछ बातें कर रहा है, मगर उसका एक भी शब्द समझ पाना सम्भव नहीं। नेपथ्य में शोर बढ़ता जाता है। एक आवाज़ सुनाई देती है : "आइये, यहां से चलें ..." ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना, आन्या और ज़ंजीर से बंधे कुत्ते के साथ शर्लोत्ता इवानोव्ना का प्रवेश। सभी सफ़री कपड़ों में हैं। वार्या ओवरकोट पहने है और सिर पर रूमाल बांधे है। गायेव, सिमेओनोव-पीश्चिक, लोपाखिन, गठरी और छतरी लिये दुन्याशा तथा चीज़ें उठाये हुए नौकर-चाकर कमरे में से गुज़रते हैं।)

आन्या : आइये, यहां से चलें। अम्मां, तुम्हें याद है कि यह कौन-सा कमरा है ?

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना (ख़ुशी से, आंखों में आंसू लाते हुए) : बच्चों का कमरा !

वार्या : कितनी ठण्ड है, मेरे तो हाथ अकड़ गये। **(ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना से)** आपका सफ़ेद और बैंगनी – ये दोनों कमरे वैसे के वैसे ही हैं अम्मां।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : बच्चों का कमरा, मेरा प्यारा, मेरा बहुत ही अच्छा कमरा ... मैं जब छोटी थी तो यहीं सोती थी। **(रोती है)** और अब भी मानो मैं बच्ची ही हूं ... **(अपने**

भाई, वार्या और फिर भाई को चूमती है) और वार्या तो पहले जैसी ही है, संन्यासिनी-सी लगती है। दुन्याशा को भी मैंने पहचान लिया... (**दुन्याशा को चूमती है**)

गायेव: गाड़ी दो घण्टे देर से आयी। क्यों, कैसी रही? क्या ख़्याल है हमारे यहां की व्यवस्था के बारे में?

शर्लोत्ता (पीश्चिक से): मेरा कुत्ता तो गिरियां भी खाता है।

पीश्चिक (हैरान होते हुए): ज़रा ग़ौर कीजिये!

(आन्या और दुन्याशा को छोड़कर सभी चले जाते हैं)

दुन्याशा: आख़िर आप आ ही गयीं... (**आन्या का ओवरकोट और टोपी उतारती है**)

आन्या: मैं रास्ते में चार रातें नहीं सोयी... अब बहुत ठण्ड लग रही है।

दुन्याशा: आप लेण्ट के वक़्त यहां से गयी थीं। तब बर्फ़ गिर रही थी, पाला पड़ रहा था और अब? ओह, मेरी प्यारी! (**हंसती है, उसे चूमती है**) राह देखते-देखते आंखें थक गयीं मेरी ख़ुशी, मेरी आंखों की रोशनी... मैं अभी आपको बता दूंगी, एक मिनट भी यह बात अब दिल में नहीं रख सकती...

आन्या (बेमन से): फिर कोई क़िस्सा...

दुन्याशा: क्लर्क येपिख़ोदोव ने ईस्टर के बाद मुझसे शादी का प्रस्ताव किया।

आन्या: तुम तो एक ही राग अलापा करती हो... (**बाल ठीक करते हुए**) मेरे बालों के सारे पिन खो गये... (**वह बेहद थकी हुई है, लड़खड़ाती भी है**)

दुन्याशा: मेरी समझ में नहीं आता कि मैं क्या करूं। वह मुझे प्यार करता है, बेहद प्यार करता है।

**आन्या (अपने कमरे के दरवाज़े की ओर देखते हुए, प्यार

से) : मेरा कमरा, मेरी खिड़कियां, मानो मैं तो यहां से कभी गयी ही नहीं। मैं घर लौट आयी! कल सुबह उठते ही बाग़ में भागी फिरूंगी... ओह, काश मुझे नींद आ जाती! मैं रास्ते भर नहीं सो सकी, बेचैनी से मेरा बुरा हाल रहा।

दुन्याशा : प्योत्र सेर्गेयेविच को यहां आये तीन दिन हो गये।

आन्या (ख़ुशी से) : पेत्या आ गया!

दुन्याशा : गुसलख़ाने में सो रहे हैं, वहीं रहते हैं। कहते हैं, मैं उन लोगों को परेशान नहीं करना चाहता। **(अपनी जेब-घड़ी पर नज़र डालती है)** वैसे तो उन्हें जगा देना चाहिये, लेकिन वर्वारा मिख़ाइलोव्ना ने मना कर दिया है। बोलीं: "तुम उसे नहीं जगाना।"

(कमर पर चाबियों का गुच्छा लटकाये वार्या आती है)

वार्या : दुन्याशा, झटपट कॉफ़ी लाओ... अम्मां ने कॉफ़ी मांगी है।

दुन्याशा : अभी लाती हूं। **(जाती है)**

वार्या : शुक्र है भगवान का, तुम और अम्मां आ गयीं। तुम फिर से घर पर हो। **(उसे सहलाती है)** मेरी लाड़ली आ गयी! मेरी सुन्दरी लौट आयी!

आन्या : उफ़, कितना कुछ सहन करना पड़ा है।

वार्या : मैं कल्पना कर सकती हूं!

आन्या : मैं लेण्ट के वक़्त यहां से गयी थी, तब ठण्ड थी। शर्लोत्ता रास्ते भर सिर खाती और खेल-तमाशे दिखाती रही। तुमने शर्लोत्ता को मेरे गले का हार क्यों बना दिया था...

वार्या : मेरी गुड़िया, मैं तुम्हें अकेली कैसे भेज सकती थी। सत्रह साल की उम्र में!

आन्या : हम पेरिस पहुंचीं, वहां ठण्ड थी, बर्फ़ गिर रही

थी। फ़्रांसीसी मैं इतनी भयानक बोलती हूं कि कुछ पूछो नहीं। अम्मां पांचवीं मंज़िल पर रहती हैं, वहां गयी तो अम्मां के यहां कुछ फ़्रांसीसी मर्द-औरतें मेहमान बैठे थे, किताब लिये एक बूढ़ा पादरी था, तम्बाकू का धुआं, बू और गड़बड़ थी। मुझे अचानक अम्मां पर तरस आया, इतना ज़्यादा तरस आया कि देर तक उन्हें बांहों में भरे रही, अपने से अलग नहीं कर पायी। अम्मां बाद में मुझे सहलाती रहीं, रोती रहीं ...

वार्या (डबडबाई आंखों से) : यह सब नहीं बताओ, नहीं बताओ ...

आन्या : अम्मां ने मेन्तोनवाला अपना बंगला बेच दिया है, उनके पास अब कुछ भी नहीं रहा, कुछ भी नहीं। मेरे पास भी फूटी कौड़ी नहीं है, बड़ी मुश्किल से हम यहां तक पहुंचे हैं। अम्मां कुछ समझती ही नहीं थीं! हम किसी स्टेशन पर खाना खाने बैठते तो वह सबसे महंगी चीज़ें मंगवातीं और बैरों को रूबल तक की बख़्शीश देतीं। शर्लोत्ता भी ऐसा ही रवैया अपनाती। याशा भी इसी तरह का बढ़िया खाना मांगता। बड़ी मुसीबत थी। बात यह है कि याशा अब अम्मां का अर्दली है, हम उसे साथ ले आये हैं।

वार्या : मैंने उस बदमाश को देखा है।

आन्या : तो यहां का क्या हालचाल है? ब्याज चुका दिया?

वार्या : कहां से चुकाते?

आन्या : हे भगवान, हे भगवान ...

वार्या : अगस्त में जागीर बिक जायेगी ...

आन्या : हे भगवान ...

लोपाख़िन (दरवाज़े से झांककर गाय की तरह रम्भाता है) : म्हां ऽऽऽ **(चला जाता है)**

वार्या (डबडबाई आंखों से, लोपाख़िन की दिशा में घूंसा

दिखाते हुए) : कसकर मारती कमबख़्त के मुंह पर ...

आन्या (वार्या को बांहों में भरकर, धीमी आवाज़ में) : वार्या, उसने तुमसे शादी का प्रस्ताव किया या नहीं ? **(वार्या सिर हिलाकर इन्कार करती है)** वह तो तुम्हें प्यार करता है न ... तो तुम दोनों शादी के बन्धन में क्यों नहीं बंध जाते, किस बात का इन्तज़ार है तुम्हें ?

वार्या : मैं समझती हूं कि कुछ नहीं बने-बनायेगा हमारा। बहुत धंधे हैं उसके पास, उसे फ़ुरसत ही नहीं है मेरे बारे में सोचने की ... वह तो मेरी तरफ़ ध्यान ही नहीं देता। मुझे बख़्श दे, उसे देखकर ही मन भारी हो जाता है ... सभी हमारी शादी की चर्चा करते हैं, सभी हमें बधाइयां देते हैं, लेकिन वास्तव में कुछ भी नहीं, सब कुछ सपने जैसा है ... **(बदले हुए लहजे में)** तुम्हारा ब्रोच तो मधुमक्खी की शक्ल का है।

आन्या (दुखभरी आवाज़ में) : यह अम्मां ने खरीदा था। **(अपने कमरे में जाती है, बच्चों की तरह उल्लासपूर्ण स्वर में)** पेरिस में मैं ग़ुब्बारे में उड़ी थी !

वार्या : मेरी लाड़ली बहन आ गयी ! मेरी सुन्दरी आ गयी !

(दुन्याशा कॉफ़ी का बर्तन लेकर आती है और कॉफ़ी तैयार करती है)

(दरवाज़े के पास खड़ी होकर) मेरी गुड़िया, मैं दिन भर घर-गिरस्ती के धंधों में लगी रहती हूं और साथ ही तरह-तरह की कल्पनायें किया करती हूं। किसी धनी से तुम्हारी शादी कर देती तो मैं चैन की बंसी बजाती, खुद संन्यासिनी हो जाती, कीयेव ... फिर मास्को जाती और इसी तरह तीर्थ-यात्रायें करती रहती ... बस, इसी तरह चलती जाती। कैसा अपूर्व सुख मिल-ता ! ..

आन्या : बाग़ में पक्षी चहचहा रहे हैं। क्या वक़्त होगा?

वार्या : दो तो बज ही चुके होंगे। तुम्हें अब सोना चाहिये, मेरी गुड़िया। (**आन्या के कमरे में जाकर**) अपूर्व सुख!

(**याशा कम्बल और सफ़री थैला लिये हुए आता है**)

याशा (मंच पार करते हुए विशेष नम्रता से पूछता है) : यहां से गुज़रने की इजाज़त है?

दुन्याशा : आपको तो पहचानना भी मुश्किल है, याशा। विदेश में रहकर कैसे बदल गये हैं आप।

याशा : हुम ... और आप कौन हैं?

दुन्याशा : जब आप यहां से गये थे तो मैं इत्ती-सी थी ... (**फ़र्श से अपनी ऊंचाई दिखाती है**) मैं दुन्याशा हूं, फ़्योदोर कोज़ोदोयेव की बेटी। आपको याद नहीं रही मेरी!

याशा : हुम ... रसभरी हो! (**इधर-उधर नज़र दौड़ाकर उसे बांहों में भर लेता है। दुन्याशा चीख़ उठती है और उसके हाथ से एक तश्तरी गिर जाती है। याशा जल्दी से खिसक जाता है**)

वार्या (दरवाज़े से, नाराज़गी के स्वर में) : यहां यह सब क्या है?

दुन्याशा (रुआंसी होकर) : मुझसे तश्तरी टूट गयी ...

वार्या : यह तो अच्छा शकुन है।

आन्या (अपने कमरे से बाहर आते हुए) : अम्मां को भी बता देना चाहिये कि पेत्या यहां है ...

वार्या : मैंने उसे जगाने की मनाही कर दी है।

आन्या (सोच में डूबते हुए) : छः साल पहले पिता जी चल बसे थे, उनकी मौत के एक महीना बाद मेरा छोटा भैया, सात साल का प्यारा-सा ग्रीशा नदी में डूब गया। अम्मां यह सब

सहन नहीं कर सकीं, यहां से चली गयीं, यहां से दूर ही दूर होती गयीं ... (**सिहरती है**) काश, वह जानतीं कि कितनी अच्छी तरह से समझती हूं मैं अम्मां के दिल की हालत को!

(**ख़ामोशी**)

और पेत्या त्रोफ़ीमोव हमारे ग्रीशा का अध्यापक था। वह अम्मां को ग्रीशा की याद दिला सकता है ...

•

(**फ़ीर्स आता है, वह कोट और सफ़ेद वास्कट पहने है**)

फ़ीर्स (**चिन्ता का भाव लिये हुए कॉफ़ीदान की तरफ़ जाता है**): मालिकिन यहीं कॉफ़ी पियेंगी ... (**सफ़ेद दस्ताने पहनता है**) कॉफ़ी तैयार है? (**दुन्याशा से कड़े स्वर में**) अरी! क्रीम कहां है?

दुन्याशा: हाय राम ... (**जल्दी से जाती है**)

फ़ीर्स (**अपने आप कुछ बड़बड़ाता है**): पेरिस से लौट आयीं ... कभी तो मालिक भी पेरिस जाते थे ... बग्घी में ... (**हंसता है**)

वार्या: फ़ीर्स, क्या बात है?

फ़ीर्स: क्या पूछा आपने? (**ख़ुशी से**) मेरी मालिकिन लौट आयीं! उनके दर्शन हो गये! अब तो बेशक मर भी जाऊं ... (**ख़ुशी से रोता है**)

(**ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना, गायेव और सिमेओनोव-पीश्चिक आते हैं। सिमेओनोव-पीश्चिक बढ़िया कपड़े का रूसी ढंग का कोट और शलवार पहने है। गायेव मंच पर आते हुए हाथों और धड़ से ऐसी मुद्रा बनाता है मानो बिलियर्ड खेल रहा हो**)

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : कैसे था वह ? याद करने दो न ... पीला गेंद कोने में ! डबल को मध्य में !

गायेव : कोने में फेंका जाये ! बहन, कभी तो हम दोनों इसी कमरे में सोया करते थे और कैसी अजीब बात है कि अब मैं इक्यावन बरस का हो गया हूं ...

लोपाख़िन : हां, वक़्त तो उड़ता है।

गायेव : कौन उड़ता है ?

लोपाख़िन : मैंने कहा कि वक़्त उड़ता है।

गायेव : यहां ईथर की गन्ध आ रही है।

आन्या : मैं सोने जा रही हूं। शुभरात्रि, अम्मां। (**मां को चूमती है**)

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : मेरी प्यारी बच्ची। (**उसके हाथ चूमती है**) तुम ख़ुश हो न कि घर आ गयीं ? मैं तो अभी तक बड़ा अजीब-अजीब-सा अनुभव कर रही हूं।

आन्या : नमस्ते, मामा जी।

गायेव (उसका मुंह और हाथों को चूमता है) : भगवान तुम्हारी रक्षा करे। ओह, कितनी मिलती-जुलती हो तुम अपनी अम्मां से ! (**बहन से**) ल्यूबा, इसकी उम्र में तुम भी बिल्कुल ऐसी ही थीं।

(आन्या, लोपाख़िन और पीश्चिक से हाथ मिलाकर जाती है और दरवाज़ा बन्द कर लेती है)

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : बिटिया बहुत थक गयी है।

पीश्चिक : सफ़र भी काफ़ी लम्बा है।

वार्या (लोपाख़िन और पीश्चिक से) : तो महानुभावो ? रात के दो बज चुके हैं, आपको भी जाकर आराम करना चाहिये।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना (हंसती है) : वार्या, तुम जैसी थीं,

वैसी ही रहीं। (**उसे अपने पास बुलाकर चूमती है**) मैं कॉफ़ी पी लूं और इसके बाद यह महफ़िल ख़त्म हो जायेगी।

(**फ़ीर्स उसके पैरों के नीचे छोटी चौकी और उस पर तकिया रख देता है**)

शुक्रिया, प्यारे फ़ीर्स। कॉफ़ी की लत पड़ गयी है। इसे दिन और रात को भी पीती रहती हूं। शुक्रिया, प्यारे बाबा। (**फ़ीर्स को चूमती है**)

वार्या: जाकर देखती हूं कि सारा सामान आ गया है न... (**जाती है**)

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना: क्या सचमुच यह मैं ही यहां बैठी हूं? (**हंसती है**) मेरा मन होता है कि ख़ुशी से उछलूं-कूदूं, हाथों-बांहों को ख़ूब हिला-डुला कर नाचूं। (**हाथों से मुंह ढांप लेती है**) लेकिन कहीं यह सपना ही न हो! भगवान साक्षी है, मैं अपनी मातृभूमि को प्यार करती हूं, कैसे सच्चे दिल से चाहती हूं उसे। मैं तो गाड़ी की खिड़की से बाहर भी नहीं देख पायी, लगातार रोती रही। (**आंखें गीली हो जाती हैं**) लेकिन ख़ैर, कॉफ़ी पीनी चाहिये। शुक्रिया फ़ीर्स, शुक्रिया, मेरे प्यारे बुढ़ऊ। मैं बहुत ख़ुश हूं तुम्हें ज़िन्दा देखकर।

फ़ीर्स: परसों।

गायेव: यह अब ऊंचा सुनने लगा है।

लोपाख़िन: मुझे अभी, चार बजे के बाद ख़ार्कोव जाना है। कितने दुख की बात है! आपको जी भरकर देखना, आपसे बातें करना चाहता था... आप तो पहले जैसी ही सुन्दर हैं।

पीश्चिक (गहरी सांस लेकर): पहले से भी बढ़-चढ़कर... पेरिसी ढंग के कपड़ों ने और भी चार चांद लगा दिये... बस, डूब गयी मेरी लुटिया...

लोपाखिन : आपके भाई, लेओनीद अन्द्रेयेविच, मेरे बारे में यह कहते रहते हैं कि मैं गंवार-जाहिल हूं, पैसे का पीर हूं, लेकिन मुझे इस सबसे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। कहते रहें। मगर मैं इतना ज़रूर चाहता हूं कि आप पहले की तरह ही मुझ पर भरोसा करें, कि आपकी अद्भुत और प्यारी-प्यारी आंखों में मेरे लिये पहले जैसा ही भाव बना रहे। हे मेरे भगवान! मेरे पिता आपके पिता और दादा के दास थे। किन्तु आपने, खुद आपने मेरे लिये कभी इतना कुछ किया कि मैं अतीत के अपने सारे दुख-दर्द भूल गया और आपको किसी रिश्तेदार की तरह, रिश्तेदार से भी बढ़कर प्यार करता हूं।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : मैं इतनी ख़ुश हूं कि चैन से बैठ नहीं सकती, मेरे लिये बैठना सम्भव नहीं... (**उछलकर खड़ी होती है और बेचैनी से इधर-उधर आती-जाती है**) मैं इस ख़ुशी को बर्दाश्त नहीं कर पाऊंगी... आप लोग मुझ पर हंस सकते हैं, मैं पागल हूं... मेरी प्यारी अलमारी... (**अलमारी को चूमती है**) मेरी छोटी-सी मेज़।

गायेव : तुम्हारे पीछे यहां आया मर गयी।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना (बैठकर कॉफ़ी पीती है) : भगवान उसे स्वर्ग में जगह दे। ख़त में मुझे बताया गया था।

गायेव : और अनासतासी भी मर गया। वह भेंगा पेत्रूश्का मेरे यहां से चला गया और अब शहर में कोतवाल के यहां रहता है। (**जेब से मीठी गोलियों की डिबिया निकालता है और एक गोली मुंह में डालकर चूसता है**)

पीश्चिक : मेरी बिटिया दाशेन्का ने आपको... नमस्कार कहा है...

लोपाखिन : मेरा मन चाहता है कि आपसे कोई प्यारी, कोई ख़ुशी की बात कहूं। (**घड़ी पर नज़र डालकर**) मैं अभी

चला जाऊंगा, बात करने का भी वक़्त नहीं है... मैं दो-चार शब्दों में ही अपनी बात कहे देता हूं। यह तो आपको मालूम ही है कि क़र्ज़ चुकाने के लिये आपकी चेरी की बगिया बाईस अगस्त को बिक जायेगी। लेकिन आप चिन्ता नहीं करें, चैन की नींद सोयें। मुसीबत से बचने का रास्ता है... मैं अपनी योजना पेश करता हूं। ध्यान दीजिये! आपकी जागीर शहर से कोई १५ मील दूर है, रेलवे लाइन भी अब उसके पास से गुज़रती है। अगर चेरी की बगिया और नदी-किनारे की ज़मीन को टुकड़ों में बांटकर वहां गर्मियों के बंगले बनाने के लिये उन्हें किराये पर दे दिया जाये तो आपको साल में कम से कम पच्चीस हज़ार रूबल की आमदनी हो जायेगी।

गायेव : माफ़ी चाहता हूं, बड़ी बेतुकी बात है यह।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : येर्मोलाई अलेक्सेयेविच, आपकी बात पूरी तरह मेरी समझ में नहीं आयी।

लोपाख़िन : आप हर बंगलेवाले से एक हेक्टर के लिये कम से कम पच्चीस रूबल सालाना लेंगी। अगर इसी समय इसका विज्ञापन निकलवा दें तो मैं किसी भी चीज़ की शर्त बदकर यह कहने को तैयार हूं कि पतझर आने तक ज़मीन का एक भी टुकड़ा आपके पास नहीं रहेगा, सब किराये पर चढ़ जायेंगे। थोड़े में यह कि बचने की सूरत निकल आयी, आपको बधाई देता हूं। ज़मीन बहुत अच्छी जगह पर है, नदी गहरी है। हां, यहां सफ़ाई करवाना, फ़ालतू चीज़ों को हटाना ज़रूरी है... मिसाल के तौर पर पुरानी इमारतें, जैसे कि यह मकान जो किसी काम का नहीं रहा, हटा देनी होंगी और चेरी की इस पुरानी बगिया को भी कटवा देना होगा...

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : कटवा देना होगा? क्षमा कीजिये, आप कुछ भी तो नहीं समझते। हमारे इस सारे इलाक़े में अगर कोई

दिलचस्प, यहां तक कि कोई कमाल की चीज़ है तो वह हमारी चेरी की बगिया ही है।

लोपाख़िन : इस बगिया में अगर कमाल की कोई बात है तो सिर्फ़ यही कि यह बहुत बड़ी है। दो साल में एक बार इसकी फ़सल होती है और तब यह समझ में नहीं आता कि उसका क्या किया जाये, कोई ख़रीदनेवाला नहीं होता।

गायेव : 'विश्व-कोश' में भी इस बगिया का उल्लेख किया गया है।

लोपाख़िन (घड़ी पर नज़र डालकर) : अगर हम कोई उपाय नहीं सोचेंगे और किसी नतीजे पर नहीं पहुंचेंगे तो चेरी की बगिया और पूरी जागीर नीलाम हो जायेगी। फ़ैसला कर लीजिये! क़सम खाकर कहता हूं दूसरा कोई रास्ता नहीं है। नहीं है, नहीं है।

फ़ीर्स : पुराने वक़्तों में – कोई चालीस-पचास साल पहले चेरी को सुखाया जाता था, भिगोया जाता था, सिरके में डाला जाता था, उसका मुरब्बा तैयार किया जाता था और ऐसा भी होता था ...

गायेव : चुप रहो फ़ीर्स।

फ़ीर्स : और ऐसा भी होता था कि सुखायी हुई चेरी को घोड़ा-गाड़ियों में भर भरकर मास्को तथा ख़ार्कोव भेजा जाता था। उससे पैसा मिलता था! तब सुखायी हुई चेरी नर्म, रसीली, मीठी और ख़ुश्बूदार होती थी ... लोग इसे सुखाने का तरीक़ा जानते थे ...

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : अब कहां है यह तरीक़ा?

फ़ीर्स : लोग भूल गये। किसी को भी याद नहीं।

पीश्चिक (ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना से) : पेरिस का क्या हालचाल है? कैसा है वह? वहां आपने मेढक खाये?

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : मगरमच्छ खाये।

पीश्चिक : ज़रा ग़ौर कीजिये ...

लोपाख़िन : गांव में अब तक ज़मींदार और किसान ही होते थे और अब ये गर्मियों में बंगलोंवाले भी नमूदार हो गये हैं। क़स्बों तक सभी शहर अब बंगलों से घिरे हुए हैं। कहा जा सकता है कि कोई बीस साल बाद इन बंगलेवालों की भरमार हो जायेगी। अभी तो ये लोग अपने छज्जों में बैठकर चाय पीते हैं, लेकिन ऐसा भी हो सकता है कि अपनी एक हेक्टर ज़मीन में वे खेती-बाड़ी भी करने लगें। तब आपकी चेरी की बगिया की क़िस्मत जाग जायेगी, वह बड़ी शानदार और कमाल की जगह बन जायेगी ...

गायेव (बिगड़ते हुए) : कैसी बेतुकी बात है !

(वार्या और याशा आते हैं)

वार्या : अम्मां, आपके नाम दो तार आये हैं। **(चाबी निकालकर अलमारी खोलती है)** ये लीजिये।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : पेरिस से आये हैं। **(पढ़े बिना ही उन्हें फाड़ डालती है)** पेरिस से मुझे अब कुछ लेना-देना नहीं ...

गायेव : ल्यूबा, तुम्हें मालूम है कि कितने साल हो गये इस अलमारी को बने ? एक हफ़्ता पहले मैंने इसकी नीचेवाली दराज़ निकाली तो उस पर इसके बनाये जाने की तारीख़ खुदी हुई देखी। पूरे सौ साल हो गये इसे बने हुए। कहो, क्या ख़्याल है ? हम तो इसका शताब्दी-समारोह भी मना सकते हैं। है तो यह बेजान चीज़, फिर भी किताबों की अलमारी ठहरी।

पीश्चिक (हैरान होकर) : सौ साल ... आप ज़रा ग़ौर कीजिये ! ..

गायेव : हां ... यह है एक चीज़ ... **(अलमारी पर हाथ**

फेरते हुए) प्यारी, बहुत ही आदर के योग्य अलमारी! तुम्हारे अस्तित्व का अभिनन्दन करता हूं जो भलाई और न्याय के अच्चादर्शों को समर्पित रहा है। सौ सालों के दौरान उपयोगी और फलप्रद कार्य के लिये तुम्हारा आह्वान कभी धीमा नहीं पड़ा। **(आंसू भरकर)** तुम हमारे वंश की पीढ़ियों को प्रफुल्लता और उज्ज्वल भविष्य के प्रति आस्था प्रदान करती रहीं और हमें भलाई तथा सामाजिक आत्म-चेतना के आदर्शों की शिक्षा देती रहीं।

(ख़ामोशी)

लोपाख़िन : हां ...

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : तुम जैसे थे, वैसे ही रहे, भैया ल्योन्या।

गायेव (कुछ परेशानी महसूस करते हुए) : गेंद को दायें कोने में! मध्य में टक्कर!

लोपाख़िन (घड़ी पर नज़र डालकर) : मेरे जाने का वक़्त हो गया।

याशा (ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना को दवाई देता है) : शायद इस समय आप दवा की ये गोलियां खायेंगी ...

पीश्चिक : आपको दवाइयां नहीं खानी चाहिये, देवी जी ... इनसे न कोई नुक़सान और न फ़ायदा ही होता है ... अतीव आदरणीया ... इधर दीजिये तो। **(दवाई की गोलियां लेकर उन्हें हथेली पर पलट लेता है, उन पर फूंक मारता है, मुंह में डालकर क्वास के घूंट के साथ निगल जाता है)** देखा!

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना (घबराकर) : आपका दिमाग़ ख़राब हो गया लगता है!

पीश्चिक : सारी गोलियां खा गया।

लोपाख़िन : बड़े पेटू हो।

(सभी हंसते हैं)

फ़ीर्स : ईस्टर पर हुजूर आये और खीरों की आधी बालटी खा गये ... **(बड़बड़ाता है)**

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : यह क्या कह रहा है ?

वार्या : तीन साल से ऐसे ही बड़बड़ाता रहता है। हमें तो इसकी आदत पड़ गयी है।

याशा : बुढ़ापा जो है।

•

(बहुत दुबली-पतली, सीधी-सतर शर्लोत्ता इवानोव्ना सफ़ेद फ़्राक पहने और पेटी के साथ एक कमानीवाला चश्मा लटकाये हुए मंच पर से गुज़रती है)

लोपाख़िन : शर्लोत्ता इवानोव्ना, माफ़ी चाहता हूं, अभी तक आपका अभिवादन नहीं कर पाया। **(उसका हाथ चूमना चाहता है)**

शर्लोत्ता (हाथ पीछे खींचते हुए) : अगर आपको हाथ चूमने दूं तो इसके बाद आप कोहनी और फिर कन्धा चूमना चाहेंगे ...

लोपाख़िन : आज तो कमबख़्त क़िस्मत ही साथ नहीं दे रही।

(सब हंसते हैं)

शर्लोत्ता इवानोव्ना, कोई खेल, कोई हाथ की सफ़ाई दिखाइये न।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : शर्लोत्ता, दिखाइये, दिखाइये कोई हाथ की सफ़ाई !

शर्लोत्ता : नहीं, इस वक़्त नहीं। मुझे नींद आ रही है। **(जाती है)**

लोपाखिन: तीन हफ़्ते बाद मिलेंगे। (**ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना का हाथ चूमता है**) तब तक के लिये विदा दीजिये। जाने का वक़्त हो गया। (**गायेव से**) फिर मिलेंगे। (**पीश्चिक और लोपाखिन एक-दूसरे को चूमते हैं**) फिर मिलेंगे। (**वार्या, फ़ीर्स और याशा से हाथ मिलाता है**) जाने को मन नहीं हो रहा। (**ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना से**) अगर बंगलों के बारे में मेरी योजना जंच जाये तो मुझे सूचित कर दीजियेगा। पचास हज़ार के क़र्ज़ का मैं प्रबन्ध कर दूंगा। बड़ी गम्भीरता से सोच-विचार कीजियेगा।

वार्या (**झल्लाकर**): आख़िर अब जाने का नाम भी लीजिये!

लोपाखिन: जा रहा हूं, जा रहा हूं ... (**जाता है**)

गायेव: नीच कहीं का। वैसे, क्षमा चाहता हूं ... हमारी वार्या तो उससे शादी करनेवाली है, वह वार्या का भावी दूल्हा है।

वार्या: मामा जी, बेकार की बातें नहीं कीजिये।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना: यों वार्या, मुझे तो बहुत ख़ुशी होगी। भला आदमी है वह।

पीश्चिक: सच तो यही है कि आदमी वह ... लायक़ है ... मेरी दाशा भी कहती है कि ... बहुत-सी बातें कहती है वह तो। (**खर्राटे लेता है और उसी क्षण जाग जाता है**) फिर भी, अतीव आदरणीया, आप मुझे ... दो सौ चालीस रूबल क़र्ज़ दे दीजिये ... कल मुझे अपने रेहन पर ब्याज देना होगा ...

वार्या (**घबराकर**): नहीं, नहीं हैं!

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना: मेरे पास तो सचमुच कुछ नहीं है।

पीश्चिक: कहीं न कहीं से तो मिल ही जायेंगे। (**हंसता है**) मैं कभी उम्मीद नहीं छोड़ता। पिछली बार मैंने सोचा था कि सब कुछ चौपट हो गया, कोई रास्ता नहीं रहा और ठीक उसी

वक़्त मेरी ज़मीन पर से रेल की पटरी बिछायी गयी और… मुझे इसके लिये पैसा मिल गया। ठीक इसी तरह अब भी कोई न कोई करिश्मा हो जायेगा, आज नहीं तो कल… हो सकता है कि लाटरी के टिकट में ही मेरी दाशा के नाम दो लाख की रक़म निकल आये।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : कॉफ़ी पी ली गयी, अब सोया जा सकता है।

फ़ीर्स (गायेव के कपड़ों को ब्रश से साफ़ करते हुए समझाने के अन्दाज़ में) : फिर वह पतलून नहीं पहना जो पहनना चाहिये था। कैसे समझाऊं मैं आपको!

वार्या (धीरे से) : आन्या सो रही है। **(खिड़की को धीमे-धीमे खोलती है)** सूरज निकल आया है, ठण्ड नहीं रही। अम्मां, देखिये तो – कितने अद्भुत लग रहे हैं पेड़! हे भगवान, कैसी महकी हुई हवा है! मैनायें गा रही हैं।

गायेव (दूसरी खिड़की खोलता है) : पूरी तरह फूलों से सफ़ेद हो गयी है बगिया। तुम भूल तो नहीं गयीं ल्यूबा? यह लम्बी वीथिका बिल्कुल सीधी, खिंची हुई पेटी की तरह सीधी चली गयी है। यह चांदनी रात में कैसी चमका करती है। तुम्हें याद है न? भूल तो नहीं गयीं?

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना (खिड़की से बगिया को देखती है) : ओह मेरा बचपन, मेरे बचपन का भोलापन! मैं बच्चों के इसी कमरे में सोया करती थी, यहीं से बगिया में झांकती थी और हर सुबह को ख़ुशी मेरे साथ पलक खोलती थी। तब भी यह बगिया ऐसी ही थी, कुछ भी तो नहीं बदला। **(ख़ुशी से हंसती है)** बौराये पेड़ों से एकदम, एकदम सफ़ेद! ओह, मेरी बगिया! अंधेरी और बुरे मौसमवाली पतझर तथा ठण्डे जाड़े-पाले के बाद तुम पर फिर से जवानी आ गयी है, तुम

ख़ुशी से भरपूर हो, आकाश के फ़रिश्तों की अभी तक तुम पर कृपादृष्टि बनी हुई है... काश, मेरे दिल-दिमाग़ पर रखा हुआ यह भारी बोझ हट सकता। काश, मैं अपने अतीत को भूल सकती!

गायेव: हां, और कैसी अजीब बात है कि क़र्ज़ चुकाने के लिये हमारी इस बगिया को भी बेच दिया जायेगा...

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना: देखिये, वह हमारी दिवंगता अम्मां बगिया में से चली जा रही हैं... सफ़ेद पोशाक पहने! (**ख़ुशी से हंसती है**) अम्मां ही हैं।

गायेव: कहां?

वार्या: कैसी बात कर रही हैं, अम्मां।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना: कोई भी नहीं, मुझे ऐसे भ्रम हुआ था। दायीं ओर, कुंज की तरफ़ जानेवाले मोड़ पर सफ़ेद फूलों से ढका पेड़ ऐसे झुका हुआ है मानो कोई औरत हो...

(विद्यार्थियों की पुरानी वर्दी पहने और चश्मा लगाये हुए त्रोफ़ीमोव आता है)

कितनी अद्भुत बगिया है! ढेरों-ढेर सफ़ेद फूल, नीलाकाश...

त्रोफ़ीमोव: ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना!

(वह उसकी तरफ़ देखती है)

मैं तो आपको केवल नमस्कार करने आया हूं और इसी क्षण चला जाऊंगा। (**बड़े तपाक से उसका हाथ चूमता है**) मुझसे कहा गया था कि मैं सुबह तक इन्तज़ार करूं, लेकिन मैं इतना सब्र नहीं कर सका...

(ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना भौचक्की-सी उसकी तरफ़ देखती रहती है)

वार्या (रोते हुए) : यह पेत्या त्रोफ़ीमोव है ...

त्रोफ़ीमोव : पेत्या त्रोफ़ीमोव जो कभी आपके ग्रीशा को पढ़ाया करता था ... क्या मैं इतना ज़्यादा बदल गया हूं ?

(ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना उसे गले लगाकर धीरे-धीरे रोती है)

गायेव (परेशान होते हुए) : बस, बस करो ल्यूबा।

वार्या (रोती है) : मैंने तुमसे कहा था न पेत्या कि तुम सुबह तक इन्तज़ार करना।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : मेरा ग्रीशा ... मेरा बच्चा ... ग्रीशा ... मेरा बेटा ...

वार्या : अम्मां, इसमें किसी का बस ही क्या है। भगवान की यही इच्छा थी।

त्रोफ़ीमोव (रोते हुए, करुण स्वर में) : अब और नहीं रोइये, और नहीं रोइये ...

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना (धीरे-धीरे रोती है) : मेरा बेटा मर गया, डूब गया ... किसलिये ? किसलिये, मुझे बताओ, पेत्या ? **(धीमे स्वर में)** वहां आन्या सो रही है और मैं ऊंचे-ऊंचे बोल रही हूं ... शोर मचा रही हूं ... हां, तो पेत्या ? यह तुम्हारी शक्ल-सूरत को क्या हो गया ? तुम बुढ़ा क्यों गये हो ?

त्रोफ़ीमोव : गाड़ी में भी एक औरत ने मुझे फटीचर रईसज़ादा कहा।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : तब तुम बिल्कुल छोकरे थे, प्यारे-से लगनेवाले विद्यार्थी, लेकिन अब तुम्हारे बाल विरले हो गये हैं, आंखों पर चश्मा चढ़ गया है। क्या तुम अभी भी विद्यार्थी हो ? **(दरवाज़े की तरफ़ जाती है)**

त्रोफ़ीमोव : शायद मैं चिरन्तन विद्यार्थी ही रहूंगा।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना (भाई और फिर वार्या को चूमती है) : तो जाइये, जाकर सो जाइये ... तुम भी बूढ़े हो गये लेओनीद।

पीश्चिक (उसके पीछे-पीछे जाता है) : तो अब सोना चाहिये ... ओह, यह मेरा जोड़ों का दर्द। मैं तो आपके यहां ही ठहरूंगा ... मेरी बहुत अच्छी ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना, कल सुबह आप मुझे ... दो सौ चालीस रूबल दे दीजिये ...

गायेव : यह अपना ही राग अलापता जा रहा है।

पीश्चिक : दो सौ चालीस रूबल। मुझे रेहन पर सूद अदा करना है।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : भैया मेरे, नहीं हैं मेरे पास रूबल।

पीश्चिक : लौटा दूंगा, प्यारी ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना ... कोई बड़ी रक़म थोड़े ही है ...

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : अच्छी बात है, लेओनीद दे देगा ... लेओनीद, तुम दे दो।

गायेव : हां, मैं दे दूंगा, मुंह धो रखे।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : क्या किया जाये, दे दो ... उसे ज़रूरत है ... लौटा देगा।

(ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना, त्रोफ़ीमोव, पीश्चिक और फ़ीर्स जाते हैं। गायेव, वार्या और याशा मंच पर रह जाते हैं)

गायेव : बहन की पैसा उड़ाने की आदत अभी तक नहीं गयी। **(याशा से)** तुम ज़रा हट जाओ भले आदमी, तुमसे मुर्गियों की बू आती है।

याशा (व्यंग्यपूर्ण मुस्कान से) : लेओनीद अन्द्रेयेविच, आप जैसे थे वैसे ही रहे।

गायेव : क्या ? (**वार्या से**) क्या कहा इसने ?

वार्या (**याशा से**) : तुम्हारी मां गांव से आयी है, कल से नौकरों की कोठरी में बैठी है, तुमसे मिलना चाहती है ...

याशा : बैठी है, तो बैठी रहे !

वार्या : ओह, बेहया कहीं का !

याशा : बड़ी ज़रूरत है मुझे उसकी। कल भी आ सकती थी। (**जाता है**)

वार्या : अम्मां पहले जैसी ही रहीं, ज़रा भी नहीं बदलीं। अगर उनकी चले तो वह सब कुछ ही लुटा दें।

गायेव : हां ...

(**ख़ामोशी**)

जब किसी बीमारी के बहुत-से इलाज बताये जाते हैं तो इसका मतलब यह होता है कि बीमारी का कोई इलाज नहीं। मैं सोचता रहता हूं, अक्ल लड़ाता रहता हूं, मुझे बहुत से, बहुत ज़्यादा उपाय सूझते हैं और इसका मतलब यह है कि कोई भी उपाय नहीं है। अच्छा होता कि कहीं से कोई बड़ी विरासत मिल जाती, हमारी आन्या की किसी बहुत ही अमीर आदमी से शादी हो जाती, यारोस्लाव्ल जाकर काउंटेस मौसी के यहां अपनी क़िस्मत आज़मायी जाती। मौसी तो इतनी अमीर है कि कोई हद ही नहीं।

वार्या (**रोती है**) : काश, भगवान किसी तरह हमारी मदद करे।

गायेव : रोओ नहीं। मौसी है तो बहुत अमीर, मगर हमें चाहती नहीं। इसका पहला कारण तो यह है कि बहन ने किसी कुलीन से नहीं, बल्कि वकील से शादी की ...

(दरवाज़े के पास आन्या दिखाई देती है)

कुलीन से शादी नहीं की और फिर उसके जीवन का रंग-ढंग भी प्रशंसनीय नहीं रहा। वह अच्छी है, दयालु है, सहृदय है, मैं उसे बहुत प्यार करता हूं। लेकिन सचाई को चाहे कितना ही घटाकर क्यों न देखा जाये, यह तो मानना ही पड़ेगा कि वह चरित्रहीन है। उसकी हर छोटी-से छोटी बात में इस बात की अनुभूति होती है।

वार्या (फुसफुसाकर) : आन्या दरवाज़े के पास खड़ी है।

गायेव : क्या?

(ख़ामोशी)

अजीब बात है, मेरी दायीं आंख में कुछ पड़ गया लगता है... साफ़ दिखाई नहीं देता। बृहस्पतिवार को जब मैं ज़िला अदालत में था तो...

(आन्या आती है)

वार्या : तुम सोती क्यों नहीं आन्या?

आन्या : नींद नहीं आ रही। कोशिश करके देख चुकी।

गायेव : मेरी गुड़िया। **(उसके मुंह और हाथों को चूमता है)** मेरी बिटिया... **(आंसू भरकर)** तुम मेरी भानजी नहीं, मेरा फ़रिश्ता हो, मेरा सर्वस्व हो। विश्वास करो, मेरी बात का विश्वास करो...

आन्या : मैं आप पर विश्वास करती हूं, मामा जी। सभी आपको प्यार करते हैं, आपका आदर करते हैं... लेकिन प्यारे मामा जी, आपको चुप रहना चाहिये, केवल चुप रहना चाहिये।

अभी-अभी आप मेरी अम्मां, अपनी बहन के बारे में क्या कह रहे थे? किसलिये आपने ऐसा कहा?

गायेव: हां, हां... (**आन्या के हाथ से अपना मुंह ढंक लेता है**) सचमुच, बड़ी बुरी बात है यह! भगवान! मुझ पर दया करो भगवान! आज मैंने किताबों की अलमारी के सामने भाषण झाड़ दिया... कैसी बेवक़ूफ़ी थी यह! भाषण पूरा करने के बाद ही समझा कि बड़ी हिमाक़त थी यह।

वार्या: सच, मामा जी, आपको तो चुप रहना चाहिये। मुंह ही नहीं खोलिये, बस, क़िस्सा ख़त्म।

आन्या: चुप रहेंगे तो ख़ुद को भी चैन मिलेगा।

गायेव: नहीं बोलूंगा। (**आन्या और वार्या के हाथ चूमता है**) बिल्कुल नहीं बोलूंगा। सिर्फ़ ज़रूरी काम की एक बात करूंगा। बृहस्पति को मैं ज़िला अदालत में गया था, वहां जान-पहचान के कुछ लोग मिल गये, इधर-उधर की बातें होने लगीं और बातों-बातों में यह पता चला कि हुंडी लिखकर बैंक का सूद चुकाने के लिये क़र्ज़ लिया जा सकता है।

वार्या: काश, भगवान हमारी मदद करे!

गायेव: मंगल को वहां जाऊंगा, फिर से बातचीत करूंगा। (**वार्या से**) रोना बन्द करो। (**आन्या से**) तुम्हारी अम्मां लोपाख़िन से बात करेंगी। वह निश्चय ही उन्हें इन्कार नहीं करेगा... और तुम सफ़र की थकान उतर जाने के बाद अपनी काउंटेस नानी के पास यारोस्लाव्ल चली जाना। तो हम तीन तरफ़ से इस मामले पर धावा बोलेंगे और समझो कि जीत यक़ीनी तौर पर हमारी होगी। मुझे विश्वास है कि ब्याज हम चुका देंगे... (**मुंह में एक मीठी गोली डालकर चूसता है**) अपने सिर की क़सम खाकर कहता हूं, तुम जो भी कहो, मैं वही क़सम खाने को तैयार हूं कि जागीर नहीं बिकेगी। (**जोश

से) मैं अपनी सारी ख़ुशियों की क़सम खाता हूं! यह रहा मेरा हाथ, मैं तुम्हें वचन देता हूं कि अगर जागीर नीलाम हो जाये तो तुम मेरे मुंह पर थूक देना, मुझे नीच-कमीना कहना! अपनी जान की क़सम खाता हूं।

आन्या (शान्त होकर मामा के पास ख़ुश-ख़ुश आती है) : कितने अच्छे हैं आप, मामा जी, कितने समझदार हैं। **(बांहों में भर लेती है)** अब मेरी चिन्ता दूर हो गयी! मन शान्त हो गया! मैं ख़ुश हूं!

(फ़ीर्स आता है)

फ़ीर्स (झिड़कते हुए) : लेओनीद अन्द्रेयेविच, आपको ईश्वर का कोई डर-भय नहीं है! कब सोयेंगे?

गायेव : अभी, अभी। तुम जाओ, फ़ीर्स। तुम चिन्ता नहीं करो, मैं अपने कपड़े ख़ुद ही उतार लूंगा। तो बच्चियो, बाई-बाई... कल और तफ़सील में बातें करेंगे, लेकिन अब तो तुम जाकर सोओ। **(आन्या और वार्या को चूमता है)** मैं नौवें दशक* का आदमी हूं... इस वक़्त के बारे में लोग नाक-भौंह भी सिकोड़ते हैं, फिर भी मैं यह कह सकता हूं कि अपनी आस्थाओं-विश्वासों के लिये मुझे बहुत काफ़ी क़ीमत चुकानी पड़ी अपने जीवन में। योंही तो मुझे किसान प्यार नहीं करते। किसान को जानना-समझना चाहिये! यह मालूम होना चाहिये कि वह...

आन्या : मामा जी, आप फिर शुरू हो गये!

वार्या : आप चुप रहें न मामा जी।

फ़ीर्स (झुंझलाकर) : लेओनीद अन्द्रेयेविच!

गायेव : आ रहा हूं, आ रहा हूं... तुम बिस्तर पर जाओ।

---

* १६वीं शताब्दी के अंत में रूस में प्रतिक्रिया का समय था। – अनु०

दोनों तरफ़ से बीच की पाकेट में! क्या बढ़िया निशाना है... **(जाता है, उसके पीछे-पीछे फ़ीर्स छोटे-छोटे क़दम उठाता चल रहा है)**

आन्या: मेरा मन अब शान्त हो गया। यारोस्लाव्ल मैं नहीं जाना चाहती, नानी मुझे अच्छी नहीं लगती, लेकिन मेरा मन अब शान्त है। मामा जी को धन्यवाद। **(बैठती है)**

वार्या: अब सोना चाहिये। मैं जाती हूं। लेकिन सुनो, जब तुम नहीं थीं तो यहां कुछ गड़बड़ हो गयी थी। जैसा कि तुम जानती हो, नौकरों के पुराने घर में सिर्फ़ पुराने नौकर येफ़ीम, पोल्या, येव्स्तीग्नेई और कार्प ही रहते हैं। उन्होंने कुछ लफ़ंगों-बदमाशों को रात बिताने के लिये यहां ठहराना शुरू कर दिया – मैं चुप रही। मगर तभी ऐसी अफ़वाहें सुनने को मिलीं कि मानो मैं कंजूसी करते हुए उन्हें सिर्फ़ मटर ही खाने को देती हूं। सुना तुमने... और ऐसी अफ़वाहें फैलायीं येव्स्तीग्नेई ने... "अच्छी बात है, अगर ऐसा ही है तो तुम भी मज़ा चखो," मैंने सोचा। सो मैंने येव्स्तीग्नेई को बुलवा भेजा... **(जम्हाई लेती है)** वह आया... मैंने उससे कहा: "यह सब क्या है, येव्स्तीग्नेई... तुम कैसे उल्लू हो..." **(आन्या की ओर देखकर)** प्यारी आन्या!..

(ख़ामोशी)

सो गयी!.. **(आन्या की बांह थामकर)** आओ, चलें बिस्तर पर। **(उसे ले जाती है)** मेरी लाड़ली बहन सो गयी! आओ चलें...

(जाती है)

(बगिया से दूर कोई चरवाहा मुरली बजाता सुनाई देता है।

त्रोफ़ीमोव मंच पर से गुज़रता है और वार्या तथा आन्या को देखकर रुक जाता है)

वार्या : शी ... वह सो रही है ... सो रही है ... चलो, मेरी गुड़िया।

आन्या (कुछ-कुछ नींद में, धीरे-धीरे) : बहुत थक गयी हूं ... घंटियां बजती जा रही हैं ... प्यारे ... मामा जी ... अम्मां और मामा जी ...

वार्या : चलो, मेरी लाड़ली, चलो ... **(आन्या के कमरे में जाती है)**

त्रोफ़ीमोव (प्यार से) : मेरी रोशनी ! मेरी बहार !

(परदा गिरता है)

दूसरा अंक

(मैदान। पुराना, टेढ़ा-मेढ़ा हो चुका और कभी का भूला-बिसरा गिरजा, जिसके नज़दीक कुआं और बड़े-बड़े पत्थर हैं जो स्पष्टतः कभी क़ब्रों के पत्थर रहे होंगे। वहां एक पुरानी बेंच रखी है। गायेव के घर की ओर जानेवाला मार्ग नज़र आता है। एक ओर को कुछ-कुछ काले दिखते चिनारों की झलक मिलती है – वहीं से चेरी की बगिया शुरू होती है। दूरी पर टेलीग्राफ़ के खम्भों की क़तार है और बहुत ही दूर क्षितिज पर एक बड़े शहर की हल्की-सी रूपरेखा है। एकदम साफ़ और अच्छे मौसम में यह शहर दिखाई देता है। कुछ ही देर में सूर्यास्त होनेवाला है। शर्लोत्ता, याशा और दुन्याशा बेंच पर बैठी हैं। येपिख़ोदोव उनके पास खड़ा हुआ गिटार बजा रहा है। सभी विचारमग्न बैठे हैं। शर्लोत्ता पुरानी, छज्जेदार टोपी पहने है। उसने कंधे से बन्दूक़ उतार ली है और वह पेटी का बकसुआ ठीक कर रही है।)

शर्लोत्ता (सोचते हुए): मेरे पास सही पासपोर्ट नहीं है, मुझे मालूम नहीं कि मेरी कितनी उम्र है। इसलिये मुझे हमेशा ऐसा लगता है कि मैं अभी छोकरी ही हूं। जब मैं बच्ची थी तो मेरे मां-बाप मेलों-ठेलों में बहुत अच्छे-अच्छे तमाशे दिखाया करते थे। मैं कलाबाज़ियां और तरह-तरह के दूसरे करतब करती थी। मां-बाप के मरने पर एक जर्मन महिला ने मुझे अपने पास रख लिया और पढ़ाने लगी। बहुत अच्छा हुआ। मैं बड़ी होकर शिक्षिका बन गयी। मैं कहां की रहनेवाली और कौन हूं – मुझे मालूम नहीं... मेरे मां-बाप कौन थे, उन्होंने शादी की थी या नहीं... यह भी नहीं जानती। **(जेब से खीरा निकालकर खाती है)** कुछ भी तो नहीं मालूम मुझे।

(ख़ामोशी)

बहुत मन होता है किसी से बातें करने को, लेकिन किससे करूं... मेरा तो कोई अपना नहीं है।

येपिख़ोदोव (गिटार बजाता और गाता है) : "शोरभरी दुनिया से मुझ को लेना क्या, दोस्त-दुश्मनों की मुझ को क्या फ़िक्र भला..." मैंडोलीन बजाने में कितना मज़ा है!

दुन्याशा : यह मैंडोलीन नहीं, गिटार है। **(जेबी दर्पण में चेहरा देखती और पाउडर लगाती है)**

येपिख़ोदोव : प्रेम-दीवाने के लिये यह मैंडोलीन ही है... **(गाता है)** "काश, प्यार की आग लगी हो दोनों के दिल में..."

(याशा साथ देने लगता है)

शर्लोत्ता : कितना बुरा गाते हैं ये लोग... छिः! गीदड़ों की तरह रोते हैं।

दुन्याशा (याशा से) : विदेशों में तो सचमुच बहुत अच्छा लगता होगा!

याशा : हां, बेशक। आपकी इस बात से तो सहमत होना ही पड़ेगा। **(जम्हाई लेता है, इसके बाद सिगार पीने लगता है)**

येपिख़ोदोव : यह समझना मुश्किल नहीं। विदेशों में हर चीज़ पूरी तरह निखर चुकी है।

याशा : ज़ाहिर है।

येपिख़ोदोव : मैं पढ़ा-लिखा आदमी हूं, तरह-तरह की बढ़िया किताबें पढ़ता रहता हूं, मगर किसी प्रकार भी यह नहीं समझ पाता कि मेरे लिये कौन-सा सही रास्ता है, कि मैं क्या चाहता हूं – ज़िन्दा रहूं या अपने को गोली मार लूं। फिर भी मैं पिस्तौल

हर वक़्त अपने साथ रखता हूं। यह रही ... (**पिस्तौल दिखाता है**)

शर्लोत्ता : खा लिया खीरा। अब चलती हूं। (**बन्दूक़ कंधे पर लटका लेती है**) येपिख़ोदोव, तुम बहुत अक़्लमन्द और बहुत ख़तरनाक आदमी हो। औरतों को तुम पर लट्टू होना चाहिये। बरर्रर ! (**जाती है**) ये सभी अक़्लमन्द ऐसे बुद्धू हैं कि किसी से बात ही नहीं की जा सकती ... हमेशा अकेली, अकेली, मेरा कोई नहीं और ... और मैं कौन हूं, किसलिये हूं, मालूम नहीं ... (**धीरे-धीरे जाती है**)

येपिख़ोदोव : किसी दूसरी चीज़ की चर्चा किये बिना, मुझे अपने बारे में यह कहना होगा कि क़िस्मत मुझ पर ऐसे ही ज़ुल्म ढाती है जैसे तूफ़ान छोटे-से जहाज़ पर। अगर मान लिया जाये कि मैं ग़लत कहता हूं तो किसलिये आज सुबह जब मैं सोकर उठा तो मेरी छाती पर बहुत भयानक मकड़ा बैठा था ... इतना बड़ा। (**दोनों हाथों से आकार दिखाता है**) क्वास पीनी चाही, तो उसमें भी बड़ी घिनौनी चीज़ नज़र आयी यानी तिलचटा।

(**ख़ामोशी**)

आपने बकुल को पढ़ा है ?

(**ख़ामोशी**)

अव्दोत्या फ़्योदोरोव्ना, मैं कुछ बात करने के लिये आपको थोड़ी तकलीफ़ देना चाहता हूं।

दुन्याशा : कहिये।

येपिख़ोदोव : अगर एकान्त में बात हो जाये तो ज़्यादा अच्छा रहे ... (**गहरी सांस लेता है**)

दुन्याशा (ज़रा घबराकर) : ठीक है ... लेकिन पहले जाकर मेरा लबादा ले आइये ... वह अलमारी के पास है ... यहां थोड़ी नमी है ...

येपिख़ोदोव : अच्छी बात है ... अभी ला देता हूं ... अब मैं जानता हूं कि मुझे अपनी पिस्तौल का क्या करना चाहिये ... **(गिटार लेकर उसे बजाता हुआ जाता है)** .

याशा : ओह, यह श्रीमान नित नई मुसीबत ! किसी से कहना नहीं, यह मूर्ख आदमी है। **(जम्हाई लेता है)**

दुन्याशा : भगवान न करे, कहीं अपने को गोली-वोली मार ले।

(ख़ामोशी)

मेरे तो बहुत जल्दी हाथ-पांव फूल जाते हैं, हर चीज़ से मुझे घबराहट होने लगती है। मैं बच्ची ही थी कि यहां मालिकों के पास आ गयी थी। मामूली लोगों की ज़िन्दगी को तो भूल ही गयी हूं। हाथ भी रईसज़ादी की तरह गोरे-गोरे हैं। ऐसी कोमल, ऐसी नाज़ुक, ऐसी नर्मदिल हो गयी हूं कि हर चीज़ से डरती हूं ... जी कांपता रहता है। याशा, अगर तुम मुझे धोखा दे दोगे तो मैं नहीं जानती कि मेरे दिल का क्या हाल होगा।

याशा (उसे चूमता है) : मेरी रसभरी ! निश्चय ही हर लड़की को यह याद रखना चाहिये कि वह लड़की है। बुरे आचार-व्यवहारवाली लड़की को तो मैं बर्दाश्त ही नहीं कर सकता।

दुन्याशा : मैं तो पागल हो गयी हूं तुम्हारे प्यार में। तुम पढ़े-लिखे हो, सभी बातों पर सोच-विचार कर सकते हो।

(ख़ामोशी)

याशा (जम्हाई लेता है) : सो तो है ... शायद बात यों है कि

अगर लड़की किसी को प्यार करती है तो इसका मतलब यह हुआ कि उसका चाल-चलन अच्छा नहीं।

(ख़ामोशी)

खुली हवा में सिगार पीने में बड़ा मज़ा है... **(कान लगाकर सुनता है)** इधर आ रहे हैं... हमारे साहब लोग हैं...

(दुन्याशा आवेगपूर्वक उसका आलिंगन करती है)

अब घर जाओ। ऐसे ज़ाहिर करना कि तुम नदी पर नहाने गयी थीं। इस रास्ते से चली जाओ वरना हमारे साहब लोग मिल जायेंगे और मेरे बारे में यह सोचेंगे कि मैंने तुम्हें प्रेम-मिलन 'के लिये यहां बुलाया था। मुझे यह बिल्कुल पसन्द नहीं।

दुन्याशा (धीरे से खांसती है) : सिगार से मेरा सिर दुखने लगा है... **(जाती है)**

(गिरजे के पास याशा बैठा रह जाता है। ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना, गायेव और लोपाख़िन आते हैं)

लोपाख़िन : पक्का फ़ैसला कर लेना चाहिये – वक़्त इन्तज़ार नहीं करता। मामला बड़ा सीधा-सादा है। आप अपनी ज़मीन पर बंगले बनाने को राज़ी हैं या नहीं ? हां या ना – बस, एक शब्द में जवाब चाहिये ! केवल एक शब्द !

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : यहां ऐसे घटिया सिगार कौन पी रहा है... **(बैठती है)**

गायेव : रेलवे लाइन बिछ गयी तो कितना आराम हो गया। **(बैठता है)** शहर जाकर खाना खा लिया... पीला गेंद बीच की पाकेट में ! मैं तो घर जाकर बिलियर्ड की

एक बाज़ी खेलना चाहता हूं।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना: ऐसी क्या जल्दी है।

लोपाखिन: बस, एक शब्द कह दीजिये! (**मिन्नत करते हुए**) मुझे जवाब दीजिये न!

गायेव (**जम्हाई लेते हुए**): क्या?

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना (**अपने पर्स को देखती है**): कल इसमें बहुत पैसे थे, मगर आज बिल्कुल कम रह गये। मेरी बेचारी वार्या किफ़ायत करने को सभी के लिये दूध का सूप बनवाती है, बूढ़ों को सिर्फ़ मटर खिलाये जाते हैं और मैं लापरवाही से पैसा उड़ाती हूं... (**पर्स गिर जाता है, पैसे बिखर जाते हैं**) लो, यह भी गिर गये... (**खीझती है**)

याशा: हुक्म हो, तो मैं अभी उठाये देता हूं। (**सिक्के समेटने लगता है**)

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना: हां, मेहरबानी करके उठा दो, याशा। मैं वहां खाना खाने के लिये गयी ही क्यों... आर्केस्ट्रा और बेहूदा-सा रेस्तरां, मेज़पोशों से साबुन की बू आ रही थी... इतनी ज़्यादा शराब किसलिये पीते हो, ल्योन्या? इतना ज़्यादा खाते क्यों हो? इतना ज़्यादा बोलते क्यों हो? आज रेस्तरां में तुम बहुत बोलते रहे और बातें भी कीं बेतुकी। सातवें दशक और ह्रासोन्मुखों के बारे में। सो भी किससे? बैरे से ह्रासोन्मुखों के बारे में!

लोपाखिन: हां।

गायेव (**हाथ झटकता है**): लगता है कि मेरा तो कुत्ते की दुमवाला ही हाल रहेगा... (**झल्लाते हुए याशा से**) जब देखो तुम तभी आंखों के सामने टापते रहते हो...

याशा (**हंसता है**): आपकी आवाज़ सुनकर मुझे हंसी आ ही जाती है।

गायेव (**बहन से**): या तो यह, या मैं...

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : जाओ याशा, जाओ यहां से ...

याशा (ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना को पर्स देता है) : अभी जाता हूं। (**मुश्किल से हंसी रोकता है**) अभी ... (**जाता है**)

लोपाखिन : धन्ना सेठ देरीगानोव आपकी जागीर ख़रीदनेवाला है। सुना है कि नीलाम के वक़्त ख़ुद आयेगा ...

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : आपको कहां से मालूम हुआ ?

लोपाखिन : शहर में चर्चा है ...

गायेव : यारोस्लाव्ल वाली मौसी ने पैसा भेजने का वादा तो किया है, लेकिन कँब और कितना, यह मालूम नहीं ...

लोपाखिन : कितना भेज देंगी वह ? एक लाख ? दो लाख ?

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : यही ... कोई दस, पन्द्रह हज़ार और इसके लिये भी शुक्रिया।

लोपाखिन : मैं माफ़ी चाहता हूं, लेकिन यह कहे बिना नहीं रह सकता कि आप जैसे लापरवाह, अव्यावहारिक और अजीब लोगों से मेरा ज़िन्दगी में पहले कभी वास्ता नहीं पड़ा। मैं आपसे रूसी भाषा में साफ़-साफ़ कह रहा हूं कि आपकी जागीर बिकनेवाली है और आपके कान पर जूं तक नहीं रेंगती।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : तो हमें क्या करना चाहिये ? हमें बताइये न कि क्या करें ?

लोपाखिन : मैं हर दिन आपको बताता हूं। हर दिन एक ही बात दोहराता हूं। चेरी की बगिया और ज़मीन को बंगलों के लिये किराये पर चढ़ाना ज़रूरी है। यह काम अभी, जल्दी से जल्दी करना चाहिये – नीलाम सिर पर आ रहा है ! इस बात को समझिये। अगर आप लोग बंगलों के बारे में एक बार फ़ैसला कर लेते हैं तो जितना भी चाहेंगे, पैसा मिल जायेगा और आप मुसीबत से बच जायेंगे।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : बंगले और उन बंगलों में रहनेवाले –

यह सब बहुत घटिया बातें हैं, मैं क्षमा चाहती हूं।

गायेव: मैं तुम्हारे साथ बिल्कुल सहमत हूं।

लोपाख़िन: मैं या तो धाड़ मारकर रोने लगूंगा या चिल्लाऊंगा या बेहोश हो जाऊंगा। अब और बर्दाश्त नहीं कर सकता! आपने मुझे पागल कर डाला है! (**गायेव से**) आप मर्द नहीं, औरत हैं!

गायेव: क्या?

लोपाख़िन: औरत! (**जाना चाहता है**)

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना (**घबराकर**): नहीं, जाइये नहीं, रुके रहिये। आपकी मिन्नत करती हूं। शायद हम कोई रास्ता सोच ही लें!

लोपाख़िन: सोचने को रखा ही क्या है!

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना: जाइये नहीं, आपकी मिन्नत करती हूं। आपकी उपस्थिति से मन लगा रहता है...

(**ख़ामोशी**)

मुझे हर समय ऐसा अनुभव होता रहता है मानो कुछ होनेवाला है, मानो हमारे ऊपर मकान गिरनेवाला है।

गायेव (**गहरी सोच में**): एक गेंद कोने में... दूसरा गेंद बीच की पाकेट में...

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना: बड़े पाप किये हैं हमने...

लोपाख़िन: कौन-से पाप हैं आपके...

गायेव (**मीठी गोली मुंह में डालता है**): लोग कहते हैं कि मैंने मीठी गोलियों में ही अपनी सारी दौलत लुटा दी... (**हंसता है**)

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना: ओह, मेरे पाप... मैंने सिरफिरी की तरह हमेशा पैसे को उड़ाया है और शादी भी की तो ऐसे आदमी से जो हमेशा सिर पर क़र्ज़ चढ़ाता रहता था। ज़बर्दस्त पियक्कड़

था वह, शेम्पेन ने ही उसकी जान ले ली। मेरी बदक़िस्मती यह कि उसके बाद मुझे एक और से प्यार हो गया, उसके साथ ज़िन्दगी की गाड़ी चलने लगी कि उसी समय मुझे पहला दण्ड मिला, पहली गाज गिरी। यहां, इसी नदी में मेरा बेटा डूब गया। मैं विदेश चली गयी, इस जगह से पूरी तरह नाता तोड़कर चली गयी ताकि फिर कभी यहां न लौटूं, इस नदी को कभी न देखूं... मैं अपनी सुध-बुध खोकर आंखें मूंदे हुए यहां से दूर भागती जा रही थी और **वह** भी मेरा पीछा कर रहा था निर्दयता से, भोंडे ढंग से। चूंकि **वह** वहां बीमार पड़ गया, इसलिये मैंने मेंटोन के नज़दीक एक बंगला ख़रीदा और तीन साल तक मुझे न दिन और न रात को चैन मिला। रोगी ने मुझे बुरी तरह सता मारा, मेरी आत्मा का सारा रस निचुड़ गया। पिछले साल क़र्ज़ चुकाने के लिये बंगला बेचकर मैं पेरिस चली गयी। **वह** वहां भी मेरे पीछे लगा रहा, मुझे लूट-लाटकर छोड़ दिया, किसी दूसरी औरत के साथ मज़े करने लगा और तब मैंने ज़हर खाकर आत्म-हत्या करने की कोशिश की... बड़ी बेवक़ूफ़ी, बड़ी शर्म की बात थी यह... अचानक मेरे दिल में रूस, अपनी मातृभूमि, अपनी बिटिया के लिये हुड़क उठने लगी... (**आंसू पोंछती है**) हे भगवान, हे ईश्वर, मुझ पर दया करो, मेरे पाप क्षमा कर दो! मुझे और दण्ड नहीं देना! (**जेब से तार निकालती है**) यह तार आज पेरिस से आया है... वह मुझसे माफ़ी मांग रहा है, मिन्नत-समाजत कर रहा है कि मैं लौट आऊं... (**तार फाड़कर फेंक देती है**) कहीं से मानो संगीत सुनाई दे रहा है। (**कान लगाकर सुनती है**)

गायेव : यह तो यहूदियों का मशहूर आर्केस्ट्रा बज रहा है। तुम्हें याद है न चार वायलिनों, बांसुरी और डबलबासवाला आर्केस्ट्रा।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : अभी तक क़ायम है यह आर्केस्ट्रा? किसी शाम को इसे अपने यहां बुलवाना चाहिये। तब ख़ूब रंग जमेगा।

लोपाख़िन (ध्यान से सुनता है) : मुझे तो कुछ सुनाई नहीं दे रहा ... **(धीरे-धीरे गाता है)** "दो जर्मन को पैसा, वह रूसी को भी कर दे, बिल्कुल फ़्रांसीसी के जैसा।" **(हंसता है)** क्या कमाल का खेल देखा मैंने कल थियेटर में, हंसते-हंसते लोट-पोट हो गया।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : शायद हंसने की कोई बात ही नहीं थी। आपको खेल-नाटक नहीं, बल्कि ख़ुद अपने को ही अक्सर देखना चाहिये। कैसी अटपटी ज़िन्दगी बिताते हैं आप सब लोग, कितना फ़ालतू बोलते हैं।

लोपाख़िन : यह सच है। यह तो मानना ही होगा कि हमारी ज़िन्दगी बड़ी बेहूदा है ...

(ख़ामोशी)

मेरा बापू देहाती, बिल्कुल उल्लू था, कुछ भी नहीं जानता-समझता था, मुझे लिखाया-पढ़ाया नहीं, बस, नशे में धुत्त होकर डंडे से मेरी चमड़ी उधेड़ता रहता था। मैं भी अपने बापू की तरह ही उल्लू और जाहिल हूं। ख़ाक भी नहीं सीखा-सिखाया, लिखावट मेरी ऐसी भद्दी है, ऐसे लिखता हूं कि लोगों के सामने सूअर जैसा लगता हूं, शर्म से आंखें झुक जाती हैं।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : आपको शादी कर लेनी चाहिये, मेरे मित्र।

लोपाख़िन : हां ... यह सही है।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : हमारी वार्या से। वह अच्छी लड़की है।

लोपाख़िन : हां।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : वह सीधे-सादे लोगों में से है, दिन भर ख़ूब काम करती है और सबसे बड़ी बात तो यह है कि आपको चाहती है। आपको भी वह एक ज़माने से पसन्द है।

लोपाख़िन : यह तो ठीक है। मुझे कोई आपत्ति नहीं... वह अच्छी लड़की है।

(**ख़ामोशी**)

गायेव : मुझे बैंक में छः हज़ार रूबल वार्षिक की नौकरी मिल रही है... सुना तुमने?

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : तुम और बैंक की नौकरी! आराम से बैठे रहो घर में...

(ओवरकोट लिये हुए फ़ीर्स आता है)

फ़ीर्स (गायेव से) : हुज़ूर, ओवरकोट पहन लीजिये, नमी है।

गायेव (ओवरकोट पहनता है) : हर वक़्त सिर पर सवार रहते हो, भैया।

फ़ीर्स : यह भी कोई बात है, हुज़ूर... सुबह कुछ कहे बिना ही चले गये। (**उसे ध्यान से देखता है**)

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : कितने बुढ़ा गये हो तुम, फ़ीर्स!

फ़ीर्स : क्या कहा मालकिन?

लोपाख़िन : यह कहा गया है कि तुम बहुत बुढ़ा गये हो।

फ़ीर्स : कब से जी रहा हूं। जब मेरा ब्याह होनेवाला था तो आपके पापा का जन्म भी नहीं हुआ था... (**हंसता है**) जब भूदासों को मुक्ति मिली तो मैं मालिक का बड़ा अर्दली बन चुका था। मैंने मुक्त होने से इन्कार कर दिया, मालिकों के पास ही बना रहा...

(ख़ामोशी)

मुझे याद है कि सब बहुत खुश हुए थे, मगर किसलिये, वे खुद नहीं जानते थे।

लोपाखिन: वह ज़माना अच्छा था। कम से कम कोड़ों से पिटाई तो की जाती थी।

फ़ीर्स (कुछ न सुनकर): इससे अच्छा और क्या हो सकता था। किसान अपने मालिकों की चिन्ता करते थे, मालिक किसानों की। किन्तु अब तो सब कुछ उलटा-सीधा हो गया है, कोई सिर-पैर ही समझ में नहीं आता।

गायेव: फ़ीर्स, चुप हो जाओ। कल मुझे शहर जाना है। वहां एक जनरल से मेरा परिचय करवाने का वादा किया गया है जो हुंडी पर क़र्ज़ दे सकता है।

लोपाखिन: कुछ बात नहीं बनेगी इससे। विश्वास कीजिये आप तो उससे अपना सूद तक नहीं चुका पायेंगे।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना: यह तो यों ही बेपर की उड़ा रहा है। कोई जनरल-वनरल नहीं है।

(त्रोफ़ीमोव, आन्या और वार्या का प्रवेश है)

गायेव: लो हमारी बच्चियां आ रही हैं।

आन्या: अम्मां यहां बैठी है।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना (प्यार से): आओ, आओ... मेरी बेटियो... **(आन्या और वार्या का आलिंगन करती है)** काश, तुम दोनों यह जानतीं कि कितना प्यार करती हूं मैं तुम्हें। मेरे पास बैठो, इस तरह।

(सभी बैठ जाते हैं)

लोपाख़िन : हमारे यह चिरन्तन विद्यार्थी हमेशा सुन्दरियों की संगत में रहते हैं।

त्रोफ़ीमोव : आपको इससे मतलब ?

लोपाख़िन : जल्द ही जनाब पचास के हो जायेंगे, लेकिन अभी तक विद्यार्थी ही हैं।

त्रोफ़ीमोव : अपने इन बेहूदा मज़ाक़ों को अपने पास ही रखिये।

लोपाख़िन : आप भी अजीब आदमी हैं, किसलिये बिगड़ते हैं ?

त्रोफ़ीमोव : आप मेरे पीछे नहीं पड़ें।

लोपाख़िन (हंसता है) : अच्छा, आप मुझे यह पूछने की इजाज़त दीजिये कि मेरे बारे में आपका क्या ख़्याल है ?

त्रोफ़ीमोव : येर्मोलाई अलेक्सेयेविच, आपके बारे में मेरा ख़्याल यह है कि आप अमीर आदमी हैं, जल्द ही लाखों में खेलेंगे। किन्तु जिस तरह पदार्थ के रूप-परिवर्तन के लिये एक ऐसे दरिन्दे की ज़रूरत होती है जो सामने आनेवाली हर चीज़ को हड़प जाये, ठीक उसी तरह आपकी भी ज़रूरत है।

(सभी हंसते हैं)

वार्या : पेत्या, आप ग्रहों के बारे में बतायें तो ज़्यादा अच्छा रहे।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : नहीं, आइये हम कलवाली बातचीत जारी रखें।

त्रोफ़ीमोव : किस बारे में ?

गायेव : गर्वीले व्यक्ति के बारे में।

त्रोफ़ीमोव : कल हमने बहुत देर तक बातचीत की, लेकिन किसी नतीजे पर नहीं पहुंच सके। आपके मतानुसार गर्वीले व्यक्ति में रहस्य का कुछ पुट होता है। सम्भव है कि अपने ढंग से

आप सही भी हों, किन्तु अगर हम सीधे-सादे ढंग से, ज़्यादा चतुराई के फेर में पड़े बिना इस पर विचार करें तो गर्व का महत्त्व ही क्या रह जाता है, उसमें तुक ही क्या है, जब शारीरिक दृष्टि से आदमी ढीले-ढाले अंजर-पंजर का है, जब कुल मिलाकर वह गंवार-फूहड़, मूर्ख और बहुत ही दुखी है? उसे अपनी शान नहीं दिखानी चाहिये। सिर्फ़ काम करना चाहिये।

गायेव: अन्त तो हर हालत में मृत्यु ही है।

त्रोफ़ीमोव: कौन कह सकता है? और अन्त मृत्यु ही है, इसका भी क्या मतलब है? सम्भव है कि आदमी की एक सौ ज्ञानेन्द्रियां हों और मरने पर केवल वही पांच अपनी चेतना खोती हों जिनसे हम परिचित हैं। शेष पचानवे में चेतना बनी रहती हो।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना: कितने अक़्लमन्द हो तुम, पेत्या!..

लोपाखिन (व्यंग्यपूर्वक): खतरनाक होने की हद तक!

त्रोफ़ीमोव: मानवजाति अपनी शक्तियों को निखारती-संवारती हुई आगे बढ़ती जा रही है। आज जो कुछ उसकी पहुंच के बाहर है वह कभी तो उसके पास आ जायेगा, स्पष्ट हो जायेगा। इसके लिये सिर्फ़ काम करना, अपने पूरे कस-बल से उन लोगों की मदद करनी चाहिये जो सचाई की खोज में लगे हुए हैं। अभी तो हमारे यहां, रूस में बहुत ही कम लोग काम करते हैं। मैं जिन बुद्धिजीवियों से परिचित हूं, उनका अधिकांश न तो कुछ खोजता है, न कुछ करता-धरता है और फ़िलहाल मेहनत करने में असमर्थ है। कहते हैं अपने को बुद्धिजीवी, लेकिन नौकरों के साथ बदतमीज़ी से पेश आते हैं, किसानों के साथ जानवरों का सा बर्ताव करते हैं, मन लगाकर पढ़ते नहीं, गम्भीरता से किसी चीज़ का अध्ययन नहीं करते, एकदम निठल्ले रहते हैं,

विज्ञानों की सिर्फ़ चर्चा ही किया करते हैं, कला को बहुत कम समझते हैं। सभी बड़े धीर-गम्भीर बने रहते हैं, उनके चेहरों पर संजीदगी छाई रहती है, सभी बड़ी महत्त्वपूर्ण समस्याओं को उठाते हैं, फ़लसफ़ा झाड़ते हैं, जबकि उन सभी की आंखों के सामने मज़दूरों को ढंग की रोटी भी नसीब नहीं होती, तकियों के बिना एक ही कमरे में तीस-तीस, चालीस-चालीस लोग सोते हैं, हर जगह खटमल, बदबू, सीलन और अनैतिकता का बोल बाला है... शायद हमारे यहां सभी अच्छी-अच्छी बातें सिर्फ़ अपनी और दूसरों की आंखों में धूल झोंकने के लिये ही की जाती हैं। मुझे बताइये हमारे यहां वे शिशु-सदन कहां हैं जिनकी इतनी चर्चा की जाती है, वाचनालय कहां हैं? केवल उपन्यासों में उनके बारे में लिखा जाता है, किन्तु वास्तव में उनका अस्तित्व ही नहीं है। सिर्फ़ है तो गन्दगी, नीचता, एशियाई रंग-ढंग ... मैं बहुत संजीदा चेहरों से डरता हूं और उन्हें नापसन्द करता हूं, गम्भीर बातों से घबराता हूं। यही ज़्यादा अच्छा होगा कि चुप रहें!

लोपाखिन: देखिये, मैं हर दिन सुबह के चार बजने के बाद उठता हूं, तड़के से शाम तक काम करता हूं, मेरे पास हमेशा अपना और लोगों का पैसा भी रहता है। मैं इस चीज़ की तरफ़ ध्यान दिया करता हूं कि हमारे इर्द-गिर्द कैसे लोग हैं। कोई काम शुरू करते ही हम यह समझ जाते हैं कि ईमानदार और सच्चे लोगों की कितनी कमी है। कभी-कभी जब मुझे नींद नहीं आती तो मैं सोचा करता हूं: "हे भगवान, तुमने हमें इतने बड़े-बड़े जंगल, असीम विस्तारोंवाले मैदान, दूर-दूर तक फैले क्षितिज दिये हैं और यहां रहते हुए हमें खुद असली देव-दानवों जैसा होना चाहिये ..."

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना: आप देव-दानव बनना चाहते हैं ... क़िस्से-

कहानियों में ही वे अच्छे हैं वरना यों तो दहशत पैदा करते हैं।

(नेपथ्य में येपिख़ोदोव गिटार बजाते हुए गुज़रता है)

(सोचते हुए) येपिख़ोदोव जा रहा है ...

आन्या (सोचते हुए) : येपिख़ोदोव जा रहा है ...

गायेव : सूरज डूब गया, महानुभावो।

त्रोफ़ीमोव : हां।

गायेव (धीमे, किन्तु मानो भाषण देते हुए) : हे दिव्य प्रकृति, तू शाश्वत ज्योति से आलोकित है, बहुत सुन्दर और उदासीन है। तू, जिसे हम मां कहते हैं, जीवन और मृत्यु के दो छोरों को मिलाती है, सृष्टि और संहार करती है ...

वार्या (मिन्नत करते हुए) : मामा जी!

आन्या : मामा जी, आप फिर बोलने लगे!

त्रोफ़ीमोव : यही बेहतर होगा कि आप पीले गेंद को बीच की पाकेट में डालें!

गायेव : मैं अब नहीं बोलूंगा, नहीं बोलूंगा।

(सभी अपने-अपने विचारों में खोये हुए बैठे हैं। ख़ामोशी। केवल फ़ीर्स का धीरे-धीरे बड़बड़ाना ही सुनाई देता है। अचानक दूरी पर मानो आकाश में ज़ोर की आवाज़ होती है। ऐसे लगता है कि झटके से कोई तार टूट गया हो। दर्दीली-सी यह आवाज़ धीरे-धीरे लुप्त हो जाती है)

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : यह कैसी आवाज़ थी?

लोपाख़िन : मालूम नहीं। शायद कहीं बहुत दूर किसी खान में खनिज ले जानेवाला बड़ा डोल टूटकर गिर गया है। किन्तु बहुत ही दूर।

गायेव: शायद बगुले जैसे किसी पक्षी की ही आवाज़ हो।

त्रोफ़ीमोव: या बड़े उल्लू की ...

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना (**सिहर उठती है**): न जाने क्यों, बुरा-बुरा-सा लग रहा है।

(**ख़ामोशी**)

फ़ीर्स: बड़े दुर्भाग्य से पहले भी ऐसा हुआ था – उल्लू चीख़ता रहा था और समोवार लगातार सूं-सूं करता रहा था।

गायेव: किस दुर्भाग्य के पहले ?

फ़ीर्स: भूदासों की मुक्ति के पहले।

(**ख़ामोशी**)

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना: आइये, अब हम लोग घर चलें, अन्धेरा होने लगा है। (**आन्या से**) तुम्हारी आंखों में आंसू ... यह क्या बात है, बिटिया ? (**उसे बांहों में भर लेती है**)

आन्या: ऐसे ही अम्मां। कोई बात नहीं।

त्रोफ़ीमोव: कोई आ रहा है।

(फटी हुई सफ़ेद छज्जेदार टोपी और ओवरकोट पहने एक राहगीर दिखाई देता है। वह कुछ-कुछ नशे में है)

राहगीर: यह बताने की कृपा करें कि यहां से मैं सीधा स्टेशन पर जा सकता हूं या नहीं ?

गायेव: जा सकते हैं। इस रास्ते से जाइये।

राहगीर: आपका बहुत ही आभारी हूं। (**खांसकर**) मौसम बहुत बढ़िया है ... (**गीत की पंक्ति बोलता है**) मेरे भाई,

पीड़ित भाई ... चल वोल्गा नदी पर जो कराहे ... (**वार्या से**) मेम साहब, भूखे रूसी को तीसेक कोपेक देने की मेहरबानी करें ...

(**वार्या डरकर चीख़ उठती है**)

लोपाख़िन (झल्लाते हुए) : शिष्ट व्यवहार करना चाहिये।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना (स्तम्भित होकर) : लीजिये ... यह लीजिये ... (**पर्स में सिक्के ढूंढ़ती है**) छोटे सिक्के नहीं हैं ... ख़ैर, कोई बात नहीं, यह लीजिये रूबल ...

राहगीर : आपका बहुत ही आभारी हूं। (**जाता है**)

(**सब हंसते हैं**)

वार्या (भयभीत) : मैं जाती हूं ... जाती हूं ... ओह, अम्मां, घर में नौकरों-चाकरों के खाने के लिये कुछ नहीं है और आपने उसे रूबल दे दिया।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : मुझ बुद्धू का तुम क्या करोगी! मेरे पास जो कुछ है, मैं घर चलकर वह सब तुम्हें दे दूंगी। येर्मोलाई अलेक्सेयेविच, मुझे कुछ क़र्ज़ और दे दीजिये! ..

लोपाख़िन : अच्छी बात है।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : तो आइये, घर चलें, वक़्त हो गया। वार्या, हमने तो यहां तुम्हारी शादी का मामला पूरी तरह तय कर लिया है। बधाई देती हूं।

वार्या (आंसू भरकर) : यह हंसी-मज़ाक़ की बात नहीं है, अम्मां।

लोपाख़िन : ओफ़ेलिया, जाओ किसी मठ में * ...

---

* शेक्सपीयर के 'हेमलेंट' नाटक से। – अनु०

गायेव : मेरे तो हाथ कांपते हैं ... एक अरसे से बिलियर्ड नहीं खेला।

लोपाखिन : ओफ़ेलिया, ओ परी, अपनी प्रार्थनाओं में मेरे पापों को भी याद कर लेना!

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : आइये, अब चलें। खाने का वक़्त होने को है।

वार्या : बुरी तरह डरा दिया उसने मुझे। दिल अभी तक धक-धक कर रहा है।

लोपाखिन : महानुभावो, आपको याद दिलाता हूं कि बाईस अगस्त को चेरी की बगिया बिक जायेगी। इसके बारे में सोचिये! .. सोचिये! ..

(त्रोफ़ीमोव और आन्या के सिवा सब जाते हैं)

आन्या (हंसते हुए) : भला हो राहगीर का। उसने वार्या को डरा दिया। अब हम दोनों ही हैं।

त्रोफ़ीमोव : वार्या को यह धुकधुकी लगी रहती है कि कहीं हम एक-दूसरे को प्यार न करने लगें। इसीलिये हर वक़्त हमारी पहरेदारी करती रहती है। अपने छोटे-से दिमाग़ से वह यह नहीं समझ पाती कि हम प्यार-मुहब्बत से ऊपर हैं। हमारे जीवन का लक्ष्य और अर्थ उस सारी तुच्छता और नीचता से बचना है जो हमारे स्वतन्त्र और सुखी होने में बाधा बनती हैं। बढ़े चलो! हम अदम्य रूप से उस, दूर क्षितिज पर जगमगाते तारे की ओर बढ़े जा रहे हैं! बढ़े चलो! पीछे नहीं रहो, साथियो!

आन्या (हाथ पर हाथ मारकर) : कितना बढ़िया बोलते हैं आप!

(ख़ामोशी)

आज यहां बहुत अच्छा लग रहा है!

त्रोफ़ीमोव : हां, मौसम बहुत प्यारा है।

आन्या : आपने यह मेरे साथ क्या कर दिया है, पेत्या। चेरी की बगिया को अब मैं पहले की तरह नहीं चाहती हूं। मैं इसे इतना अधिक प्यार करती थी कि मुझे लगता था मानो इस धरती पर इससे बढ़कर कोई दूसरी जगह ही नहीं।

त्रोफ़ीमोव : सारा रूस ही हमारा उपवन है। बहुत बड़ी और बहुत सुन्दर है हमारी पृथ्वी और अनेक अद्भुत स्थान हैं उस पर।

(ख़ामोशी)

ज़रा सोचिये आन्या : आपके दादा-परदादा, आपके सभी पुरखे भूदासों के स्वामी थे, जीते-जागते लोगों को अपने ग़ुलाम बनाकर रखते थे। क्या आपको बगीचे की हर चेरी, हर पत्ते, हर तने से कोई मानव अपनी ओर देखता हुआ प्रतीत नहीं होता, क्या आपको उनकी आवाज़ें सुनाई नहीं देतीं... ज़िन्दा लोगों का मालिक होना – इसने आप सब को, आपके पुरखों और इस समय जीवितों को ऐसे बना दिया है कि आपकी मां, स्वयं आप और आपके मामा यह अनुभव ही नहीं करते कि आप लोग ऋणी हैं, दूसरों के सिर पर मौज करते हैं, उनके बल पर जीते हैं जिन्हें आप दहलीज़ से आगे क़दम नहीं रखने देते... हम कम से कम दो सौ साल पिछड़े हुए हैं, हमने अभी तक कुछ भी तो हासिल नहीं किया, अपने अतीत तक के लिये हमारा कोई निश्चित दृष्टिकोण नहीं है। हम तो सिर्फ़ फ़लसफ़े की टांग तोड़ा करते हैं, ऊब-उदासी का रोना रोते रहते हैं या वोद्का पीते हैं।

यह तो बिल्कुल साफ़ है कि वर्तमान में जीने के लिये हमें पहले तो अतीत के पाप धोने चाहिये, उनसे निजात हासिल करनी चाहिये और यह केवल तभी सम्भव है जब हम बहुत कष्ट उठायें, अत्यधिक और अथक श्रम करें। यह समझ लीजिये, आन्या।

आन्या : हम जिस मकान में रहते हैं, वह बहुत समय से ही हमारा नहीं है। आपको वचन देती हूं कि मैं इसे छोड़कर चली जाऊंगी।

त्रोफ़ीमोव : अगर आपके पास घर-गिरस्ती की कोई चाबियां-वाबियां हैं तो उन्हें कुएं में फेंकिये और यहां से चली जाइये। पवन की तरह मुक्त हो जाइये।

आन्या (उल्लासपूर्वक) : कितने सुन्दर ढंग से कहा है आपने यह !

त्रोफ़ीमोव : विश्वास कीजिये, आन्या, मुझ पर विश्वास कीजिये ! मैं अभी तीस साल का भी नहीं हुआ, अभी तक विद्यार्थी हूं, लेकिन कितना कुछ जाना-सहा है मैंने इस ज़िन्दगी में ! जाड़ा आते ही मुझे दो जून की रोटी भी नहीं मिलती, बीमारी आ दबाती है, मैं परेशान हो उठता हूं, भिखारी की तरह पैसे-पैसे को मोहताज हो जाता हूं और – कहां-कहां की ठोकरें खाने को मजबूर नहीं किया मुझे क़िस्मत ने, कहां-कहां नहीं भटकता फिरा हूं मैं ! फिर भी मेरी आत्मा में हमेशा, हर क्षण, दिन और रात एक अस्पष्ट-सी पूर्वानुभूति बनी रही है। मैं अनुभव कर रहा हूं कि सुख-सौभाग्य आयेगा। मैं उसे देख रहा हूं, आन्या ...

आन्या (सोच में डूबते हुए) : चांद निकल रहा है।

(येपिख़ोदोव गिटार पर वही उदासीभरी धुन बजाता सुनाई देता है। चांद निकल रहा है। चिनारों के निकट वार्या आन्या

को ढूंढ़ रही है और पुकारती है: "आन्या! कहां हो तुम?")

त्रोफ़ीमोव: हां, चांद निकल रहा है।

(ख़ामोशी)

वह रहा सुख-सौभाग्य, वह आ रहा है, अधिकाधिक निकट आता जा रहा है, मुझे उसकी आहट मिल रही है। अगर हम उसे नहीं देख पायेंगे, नहीं जान सकेंगे, तो इससे क्या फ़र्क़ पड़ता है? उसे दूसरे देखेंगे!

(वार्या की आवाज़: "आन्या! तुम कहां हो?")

फिर यह वार्या सिर पर सवार है! **(झल्लाकर)** नाक में दम आ गया है इसके मारे!

आन्या: कोई परवाह नहीं करें। आइये, नदी पर चलें। वहां बहुत अच्छा है।

त्रोफ़ीमोव: चलिये।

(जाते हैं)

(वार्या की आवाज़: "आन्या! आन्या!")

(परदा गिरता है)

तीसरा अंक

(बड़े हॉल को एक मेहराब द्वारा अलग करके दीवानख़ाना बनाया गया है। एक झाड़ जल रहा है। बाहरी कमरे में यहूदियों का वही आर्केस्ट्रा बज रहा है जिसका दूसरे अंक में उल्लेख हो चुका है। दीवानख़ाने में 'ग्रैंड रोंड' नाच नाचा जा रहा है। सिमेओनोव-पीश्चिक फ़्रांसीसी भाषा में यह चिल्लाता सुनाई दे रहा है: "जोड़ों में आइये!" पीश्चिक और शर्लोत्ता का पहला जोड़ा दीवानख़ाने में दाख़िल होता है। दूसरे जोड़े में त्रोफ़ीमोव तथा ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना हैं, तीसरे में डाकख़ाने का क्लर्क और आन्या, चौथे में वार्या तथा स्टेशन मास्टर, आदि, आदि। वार्या धीरे-धीरे सिसक रही है और अपने आंसू पोंछती जाती है। दुन्याशा अन्तिम जोड़े में आती है। यह जोड़ा नाचते हुए दीवानख़ाने को लांघ जाता है। पीश्चिक फ़्रांसीसी में चिल्लाता है: "बड़े-बड़े घेरे बनाइये! अपनी-अपनी नृत्य-संगिनी को धन्यवाद देते जाइये!")

(फ़ीर्स फ़्राक-कोट पहने हुए ट्रे में सोडावाटर के गिलास लाता है। पीश्चिक और त्रोफ़ीमोव दीवानख़ाने में आते हैं)

पीश्चिक: मुझमें चर्बी बहुत ज़्यादा है, दो बार दिल के दौरे भी पड़ चुके हैं। मेरे लिये नाचना आसान नहीं। लेकिन यहां तो वही बात है कि अगर कुत्तों के गोल में शामिल हो गये तो भोंको या न भोंको, मगर दुम तो हिलाओ ही। यों मैं घोड़े की तरह हट्टा-कट्टा हूं। मेरे दिवंगत पिता, जिन्हें हंसी-मज़ाक़ बहुत पसन्द था, अक्सर कहा करते थे मानो हम उसी घोड़े के वंशज हैं जिसे कालीगुल ने सीनेट-सदस्य बनाया था... (**बैठ जाता है**) लेकिन मुसीबत सिर्फ़ यही है कि पैसे नहीं हैं! बिल्ली

को चूहों के ही सपने आते हैं ... (**खर्राटे लेता है और उसी क्षण जाग जाता है**) यही हाल मेरा है ... मैं पैसों के ही सपने देखा करता हूं ...

त्रोफ़ीमोव : आपकी शक्ल-सूरत में सचमुच घोड़े जैसा कुछ है।

पीश्चिक : तो क्या हुआ ... घोड़ा अच्छा जानवर है ... उसे बेचा जा सकता है ...

(**बग़ल के कमरे में बिलियर्ड खेले जाने की आवाज़ सुनाई देती है। हॉल में मेहराब के नीचे वार्या नज़र आती है**)

त्रोफ़ीमोव (चिढ़ाता है) : मदाम लोपाख़िना, मदाम लोपा-ख़िना !

वार्या (खीझकर) : फटीचर रईसज़ादा !

त्रोफ़ीमोव : हां, मैं फटीचर रईसज़ादा हूं और मुझे इस बात का गर्व है !

वार्या (कटुता से) : आर्केस्ट्रावालों को बुला तो लिया, मगर उन्हें देने के लिये पैसे कहां से आयेंगे ? (**जाती है**)

त्रोफ़ीमोव (पीश्चिक से) : अपने क़र्ज़ों का ब्याज चुकाने के लिये आपने जीवन में जितनी शक्ति ख़र्च की है, अगर उसी को किसी दूसरे काम में लगाते तो दुनिया को इधर से उधर कर देते।

पीश्चिक : प्रसिद्धतम, महानतम ... अत्यधिक मेधावी दार्शनिक नीत्शे ... उसने अपनी रचनाओं में कहा है मानो जाली नोट बनाना कुछ बुरा नहीं।

त्रोफ़ीमोव : आपने नीत्शे को पढ़ा है ?

पीश्चिक : बात यह है ... मुझे तो दाशा ने बताया है। मेरी अब ऐसी ही हालत है कि जाली नोट बनाऊं ... परसों मुझे तीन सौ दस रूबल देने ही हैं ... एक सौ तीस मैंने हासिल कर

लिये हैं... (**अपनी जेबों को टटोलता है, घबरा जाता है**) रूबल ग़ायब हो गये! खो गये रूबल! (**आंसू बहाते हुए**) कहां चले गये रूबल? (**ख़ुश होकर**) ये रहे कमबख़्त, अस्तर में जा घुसे थे... मुझे तो ठण्डे पसीने भी आ गये...

(**ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना और शर्लोत्ता इवानोव्ना आती हैं**)

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना (**काकेशिया का एक द्रुत लय का लोक-गीत जिसे 'लेज़गीन्का' कहते हैं, गाती है**): लेओनीद अभी तक क्यों नहीं लौटा? क्या कर रहा है वह शहर में? (**दुन्याशा से**) दुन्याशा, आर्केस्ट्रावालों को चाय तो पिला दीजिये...

त्रोफ़ीमोव: शायद अभी तक नीलामी न हुई हो।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना: आर्केस्ट्रावालों को भी बेमौक़े बुला लिया और नाच-गाने के लिये भी ठीक वक़्त नहीं है... पर ख़ैर, कोई बात नहीं... (**बैठकर धीरे-धीरे गुनगुनाती है**)

शर्लोत्ता (**पीश्चिक को ताश की गड्डी देती है**): यह लीजिये ताश की गड्डी, कोई एक पत्ता सोच लीजिये।

पीश्चिक: सोच लिया।

शर्लोत्ता: अब पत्तों को फेंट दीजिये। बहुत ठीक। लाइये, अब यह मुझे दे दीजिये, मेरे प्यारे महानुभाव पीश्चिक। एक, दो, तीन! अब आप इसे अपनी बग़ल की जेब में ढूंढ़िये...

पीश्चिक (**बग़ल की जेब से पत्ता निकालता है**): हुक्म का अट्ठा, बिल्कुल ठीक! (**हैरान होते हुए**) वाह, ज़रा ग़ौर कीजिये।

शर्लोत्ता (**ताश की गड्डी हथेली पर रखे हुए त्रोफ़ीमोव से**): जल्दी से बताइये, सबसे ऊपरवाला पत्ता क्या है?

त्रोफ़ीमोव: सबसे ऊपरवाला? हुक्म की बेग़म।

शर्लोत्ता: अच्छी बात है! (**पीश्चिक से**) अब आप बताइये, सबसे ऊपरवाला पत्ता क्या है?

पीश्चिक: पान का इक्का।

शर्लोत्ता: अच्छी बात है! (**ताली बजाती है और ताश की गड्डी ग़ायब हो जाती है**) कैसा सुहावना मौसम है आज!

(फ़र्श के नीचे से आती प्रतीत होनेवाली किसी नारी की रहस्य-मयी आवाज़ उत्तर देती है: "हां, बहुत ही बढ़िया मौसम है, श्रीमती जी!")

आप हैं मेरी सुन्दरता की अनुपम देवी ...

(आवाज़: "आप भी मुझे बहुत अच्छी लगती है, देवी जी।")

स्टेशन मास्टर (ताली बजाता है): आपने तो कमाल ही कर दिया। क्या ख़ूब साधा है अपनी आवाज़ को!

पीश्चिक (हैरान होते हुए): वाह, ज़रा ग़ौर कीजिये! ओ हसीना शर्लोत्ता इवानोव्ना ... मैं तो आप पर जी-जान से मर मिटा हूं ...

शर्लोत्ता: आप, मर मिटे हैं? (**कंधे झटकती है**) यह सूरत और मुहब्बत? (**जर्मन कहावत बोलती है**) आप हैं अच्छे इन्सान, मगर आपकी बेसुरी है तान।

त्रोफ़ीमोव (पीश्चिक के कंधे पर हाथ मारकर): तो घोड़े ही हैं आप जनाब ...

शर्लोत्ता: कृपया ध्यान दीजिये, एक और खेल देखिये। (**कुर्सी से कम्बल उठाती है**) देखिये, यह बहुत अच्छा कम्बल

है, मैं इसे बेचना चाहती हूं ... **(उसे झाड़ती है)** कोई ख़रीदना चाहता है?

पीश्चिक (हैरान होते हुए) : ज़रा ग़ौर कीजिये!

शर्लोत्ता : एक, दो, तीन! **(नीचे लटके हुए कम्बल को ऊपर उठाती है – उसके पीछे आन्या खड़ी दिखाई देती है। वह झुककर अभिवादन करती है, भागकर मां के पास जाती है, उसका आलिंगन करती है और हर्ष-उल्लास के वातावरण में हॉल में वापस भाग जाती है)**

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना (ख़ुश होकर ताली बजाती है) : कमाल है, कमाल है!..

शर्लोत्ता : एक और खेल देखिये! एक, दो, तीन। **(कम्बल ऊपर उठाती है, कम्बल के पीछे वार्या खड़ी दिखाई देती है। वह अभिवादन करती है)**

पीश्चिक (हैरान होकर) : ज़रा ग़ौर कीजिये!

शर्लोत्ता : बस, अब खेल ख़त्म! **(कम्बल को पीश्चिक के ऊपर फेंककर अभिवादन करती है और हॉल में भाग जाती है)**

पीश्चिक (उसके पीछे भागता है) : ओह, शैतान कहीं की ... ओह, कैसी लड़की है? ओह, कैसी लड़की है? **(जाता है)**

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : लेओनीद अभी तक नहीं आया। मेरी समझ में नहीं आता कि अभी तक वह शहर में क्या कर रहा है! वहां तो सभी कुछ ख़त्म हो चुका है। जागीर बिक चुकी है या नीलाम ही नहीं हुआ। किसलिये हमें इतनी देर तक दुविधा में रखा जा रहा है!

वार्या (उसे तसल्ली देने की कोशिश करते हुए) : मामा जी ने ही ख़रीद ली है जागीर, मुझे इसका पूरा विश्वास है।

त्रोफ़ीमोव (मज़ाक़ उड़ाते हुए) : हां, ख़रीद ली होगी।

वार्या : नानी ने मामा जी को अधिकार पत्र भेजा है कि वह क़र्ज़ को उनके ज़िम्मे डालकर उनके नाम से जागीर ख़रीद लें। वह आन्या के लिये ऐसा कर रही हैं। मुझे विश्वास है कि भगवान हमारी सहायता करेगा और मामा जी जागीर ख़रीद लेंगे।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : यारोस्लाव्ल वाली तुम्हारी नानी ने, जो हम पर भरोसा नहीं करतीं, अपने नाम से जागीर ख़रीदने के लिये पन्द्रह हज़ार रूबल भेजे हैं। लेकिन यह रक़म तो ब्याज चुकाने के लिये भी काफ़ी नहीं होगी। (**हाथों से मुंह ढांप लेती है**) आज मेरी क़िस्मत का फ़ैसला हो रहा है, मेरी क़िस्मत का ...

त्रोफ़ीमोव (वार्या को चिढ़ाता है) : मदाम लोपाख़िना!

वार्या (झुंझलाकर) : चिरन्तन विद्यार्थी! दो बार यूनिवर्सिटी से निकाले जा चुके हो।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : तुम ऐसे खीझ क्यों रही हो, वार्या? वह लोपाख़िन का नाम लेकर ही तुम्हें चिढ़ाता है न, तो क्या हुआ? मन करता है तो लोपाख़िन से शादी कर लो। वह अच्छा और दिलचस्प आदमी है। अगर मन नहीं करता तो नहीं करो उससे शादी। मेरी प्यारी कोई मजबूर नहीं कर रहा तुम्हें ऐसा करने को ...

वार्या : अम्मां, आपसे साफ़-साफ़ कहना चाहती हूं कि मैं इस मामले को बहुत गम्भीर मानती हूं। वह भला आदमी है, मुझे अच्छा लगता है।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : तो कर लो शादी। इन्तज़ार किस बात का है, मेरी समझ में नहीं आता!

वार्या : अम्मां, मैं स्वयं तो उससे ऐसा करने को नहीं कह सकती। दो साल हो गये सभी उसके साथ मेरा नाम जोड़ते हैं,

इस बात की चर्चा करते हैं, किन्तु वह या तो चुप रहता है या मज़ाक़ करता है। मैं यह सब समझती हूं। वह दिनोंदिन अमीर होता जा रहा है, अपने काम-काज में लगा रहता है, उसे मेरे बारे में सोचने की फ़ुरसत नहीं। अगर मेरे पास पैसे होते, बेशक थोड़े ही, अधिक नहीं तो सौ रूबल भी होते तो मैं सब कुछ छोड़-छाड़कर यहां से कहीं दूर चली जाती। किसी मठ में जाकर रहने लगती।

त्रोफ़ीमोव : भई वाह, तब तो मज़ा ही आ जाता!

वार्या (त्रोफ़ीमोव से) : विद्यार्थी को समझदार होना चाहिये। **(आंखों में आंसू भरकर नर्मी से)** कैसे बदसूरत हो गये तुम, पेत्या। कितने बुढ़ा गये हो! **(रोना बन्द करके ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना से)** सिर्फ़ एक ही चीज़ मुझसे बर्दाश्त नहीं होती – मैं काम के बिना ठाली नहीं बैठी रह सकती, अम्मां। मुझे तो हर वक़्त कुछ न कुछ करते रहना चाहिये।

(याशा आता है)

याशा (बड़ी मुश्किल से हंसी रोककर) : येपिख़ोदोव ने बिलियर्ड खेलने का डंडा तोड़ दिया है!.. **(जाता है)**

वार्या : येपिख़ोदोव किसलिये यहां है? उसे बिलियर्ड खेलने की इजाज़त किसने दी? कैसे हैं ये लोग, मेरी समझ में नहीं आता ... **(जाती है)**

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : इसे चिढ़ाया नहीं करो, पेत्या। वह तो यों ही बहुत दुखी रहती है।

त्रोफ़ीमोव : वह बहुत ही ज़्यादा रोब जमाती रहती है, हर चीज़ में टांग अड़ाया करती है। गर्मी भर इसने मुझे और आन्या को चैन नहीं लेने दिया। इसे यही धुकधुकी लगी रही कि कहीं हम एक-दूसरे को प्यार न करने लगें। इसे इस चीज़

से क्या लेना-देना है? फिर मैंने तो कभी ऐसा अन्देशा पैदा करने का मौक़ा भी नहीं दिया। मैं तो ऐसी घटिया बातों से बहुत दूर हूं। हम प्यार से ऊपर हैं!

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : तब तो यह कहना होगा कि मैं प्यार से नीचे हूं। (**बहुत बेचैनी से**) लेओनीद अभी तक क्यों नहीं लौटा? सिर्फ़ इतना ही पता चल जाये कि जागीर बिकी या नहीं? मुझे यह मुसीबत इतनी भयानक लगती है कि समझ में नहीं आता कि मैं इसके बारे में क्या सोचूं, मेरी अक़्ल बिल्कुल काम नहीं करती... मैं अभी चीख़ने-चिल्लाने लग सकती हूं... कोई बेवक़ूफ़ी कर सकती हूं। मुझे बचाओ, पेत्या। मुझसे कोई बात करो, कुछ कहो...

त्रोफ़ीमोव : जागीर आज बिक गयी या नहीं बिकी – इससे कोई फ़र्क़ पड़ता है क्या? वह तो कभी की हाथ से जा चुकी, पीछे हटने का कोई रास्ता नहीं, सब कुछ ख़त्म हो चुका। अपने को शान्त कीजिये, ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना। अपने को धोखे में नहीं रखिये, जीवन में कम से कम एक बार तो सचाई का सामना कीजिये।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : किस सचाई का? तुम यह देखते हो कि कहां सच और कहां झूठ है, लेकिन मैं तो जैसे अपनी आंखों की रोशनी खो चुकी हूं, मुझे कुछ भी दिखाई नहीं देता। तुम सभी महत्त्वपूर्ण प्रश्नों को क्या इसीलिये साहस से हल नहीं कर लेते हो कि तुम जवान हो, तुम्हें अपनी किसी भी समस्या के लिये दुख:-दर्द नहीं सहना पड़ा? तुम हिम्मत से भविष्य की ओर देखते हो तो क्या इसीलिये नहीं कि तुम्हें न तो कुछ भयानक दिखाई देता है और न तुम्हें उसकी आशंका ही है, क्योंकि तुम्हारी जवान आंखों के सामने जीवन का विस्तार अभी पूरी तरह उभरा नहीं? हम लोगों की तुलना में तुम लोग

अधिक साहसी, अधिक ईमानदार, अधिक गहन हो। किन्तु तुम तनिक सोच-विचार करो, थोड़ी-सी उदारता दिखाओ, मुझ पर दया करो। आख़िर यहीं तो मेरा जन्म हुआ था, यहीं तो मेरे माता-पिता, मेरे दादा रहे। इस घर से मुझे प्यार है, चेरी की बगिया के बिना मैं अपने जीवन की कल्पना नहीं कर सकती। अगर इसे बेचना ही है तो इसके साथ-साथ मुझे भी बेच डाला जाये... (**त्रोफ़ीमोव को बांहों में भर लेती है, उसका माथा चूमती है**) मेरा बेटा भी तो यहीं नदी में डूब गया था... (**रोती है**) मुझ पर दया करो, भले, दयालु आदमी।

त्रोफ़ीमोव: आप तो जानती ही हैं कि मैं आपके प्रति हार्दिक सहानुभूति रखता हूं।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना: किन्तु इस बात को दूसरे ढंग से कहना चाहिये, दूसरे ढंग से... (**रूमाल निकालती है, फ़र्श पर एक तार गिर जाता है**) तुम सोच भी नहीं सकते कि आज मेरा मन कितना भारी है। यहां बहुत शोर-गुल है, हर आवाज़ से मेरा दिल कांप उठता है, मैं सिर से पांव तक कांप रही हूं, किन्तु अपने कमरे में नहीं जा सकती, मुझे अकेली को सन्नाटे में डर लगता है। मेरी भर्त्सना-निन्दा नहीं करो, पेत्या... मैं तुम्हें अपने बेटे की तरह चाहती हूं। क़सम खाकर कहती हूं कि मैं तो ख़ुशी से तुम्हारे साथ आन्या की शादी भी कर देती। किन्तु भैया, तुम्हें पढ़ना चाहिये, अपनी पढ़ाई ख़त्म करनी चाहिये। तुम कुछ भी तो नहीं करते। क़िस्मत तुम्हें कभी यहां तो कभी वहां फेंक देती है। बड़ी अजीब बात है यह... मैं सच कह रही हूं न? दाढ़ी के मामले में भी कुछ करना चाहिये ताकि यह किसी तरह ढंग से बढ़ जाये... (**हंसती है**) तुम्हें देखकर हंसी आती है।

त्रोफ़ीमोव (तार उठाता है) : मैं कोई यूसुफ़ नहीं बनना चाहता।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : यह तार पेरिस से आया है। हर दिन तार आता है। कल आया था, आज आया है। वह जंगली आदमी फिर से बीमार हो गया है, फिर से उसकी हालत ख़राब है... वह क्षमा मांगता है, मुझसे लौटने का अनुरोध करता है। सच बात तो यह है कि मुझे पेरिस जाना चाहिये, उसके पास जाना चाहिये। तुम्हारे चेहरे पर कड़ाई का भाव है, पेत्या। लेकिन क्या किया जाये, भैया, मैं क्या करूं। वह बीमार है, अकेला है, दुखी है। कौन वहां उसकी देख-भाल करता होगा, कौन उसे कोई ग़लती करने से रोकेगा, कौन उसे वक़्त पर दवा-दारू देगा? फिर इसमें छिपाने या चुप रहने की कौन-सी बात है— यह तो स्पष्ट है कि मैं उसे प्यार करती हूं। प्यार करती हूं, प्यार करती हूं... वह मेरे गले में बंधा हुआ पत्थर है, मैं उसके साथ तल में जा रही हूं, मगर मैं इस पत्थर को प्यार करती हूं और उसके बिना ज़िन्दा नहीं रह सकती। **(त्रोफ़ीमोव का हाथ दबाती है)** मेरे बारे में कुछ बुरा नहीं सोचो, पेत्या। मुझसे कुछ नहीं कहो, कुछ भी नहीं...

त्रोफ़ीमोव (रुंधे कण्ठ से) : भगवान के लिये मुझे क्षमा करें कि मैं आपसे साफ़-साफ़ यह कह रहा हूं— लेकिन उसी ने तो आपको लूटा है!

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : नहीं, नहीं, नहीं, ऐसा नहीं कहो... **(कानों में उंगलियां ठूंस लेती है)**

त्रोफ़ीमोव : सिर्फ़ अकेली आप ही यह नहीं जानतीं कि वह कमीना है! वह बहुत कमीना, बड़ा नीच है...

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना (नाराज़गी से, मगर अपने पर क़ाबू पाते हुए) : तुम छब्बीस या सत्ताईस साल के हो गये हो, लेकिन

अभी तक स्कूली छोकरों जैसी बातें करते हो!

त्रोफ़ीमोव: तो क्या हुआ!

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना: तुम्हें मर्द होना चाहिये, इस उम्र में तो प्यार करनेवालों को समझना चाहिये। और ख़ुद को भी प्यार करना चाहिये... प्यार में दीवाना होना चाहिये! (**बिगड़ते हुए**) तुम पवित्र नहीं, पवित्रता का ढोंग करते हो, तुम सिरफिरे सनकी हो, झक्की हो...

त्रोफ़ीमोव (बेहद परेशान होकर): क्या कह रही हैं आप!

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना: "मैं प्यार से ऊपर हूं!" तुम प्यार से ऊपर नहीं, बल्कि, जैसा कि हमारा फ़ीर्स कहता है – बौड़म हो। तुम्हारी उम्र में किसी प्रेमिका के बिना होना, यह भी कोई बात है!..

त्रोफ़ीमोव (बहुत परेशान होकर): यह तो हद ही हो गयी! यह आप क्या कह रही हैं?! (**अपना सिर हाथों में थामकर जल्दी से हॉल में चला जाता है**) उफ़, यह तो हद ही हो गयी, मैं यह सब नहीं सह सकता, मैं जाता हूं... (**जाता है, मगर उसी वक़्त लौटता है**) हमारे बीच अब सब कुछ ख़त्म समझिये! (**ड्योढ़ी की तरफ़ जाता है**)

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना (उसे पुकारती है): पेत्या, रुक जाओ! तुम भी कैसे अजीब आदमी हो, मैंने तो मज़ाक़ किया था! पेत्या!

(यह सुनाई देता है कि ड्योढ़ी में कोई तेज़ी से ज़ीने से नीचे उतर रहा है और फिर अचानक धम से गिर जाता है। आन्या और वार्या चीख़ उठती हैं, किन्तु उसी समय हंसी सुनाई देती है)

क्या हो गया?

(आन्या भागी हुई आती है)

आन्या (हंसते हुए) : पेत्या ज़ीने से उतरते हुए गिर पड़ा! **(वापस भाग जाती है)**

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : यह भी एक नमूना ही है, यह पेत्या ...

(स्टेशन मास्टर हॉल के बीचोंबीच खड़ा होकर अलेक्सेई तोल-स्तोय की "पापिन" कविता पढ़ रहा है। सभी उसे सुनते हैं, किन्तु उसके कुछ पंक्तियां पढ़ने पर ही ड्योढ़ी से वाल्ज़ नृत्य की धुन सुनाई देने लगती है और कविता-पाठ अधूरा रह जाता है। सभी नाचने लगते हैं। त्रोफ़ीमोव, आन्या, वार्या और ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना ड्योढ़ी में से बाहर आते हैं)

तो पेत्या, पवित्र आत्मा ... मैं माफ़ी मांगती हूं ... आओ, नाचें ... **(पेत्या के साथ नाचती है)**

(आन्या और वार्या नाचती हैं)

(फ़ीर्स आता है, अपनी छड़ी को बग़लवाले कमरे के दरवाज़े के साथ टिका देता है। दीवानख़ाने से याशा भी आ जाता है, नाचनेवालों को देखता है)

याशा : क्या बात है, दादा?

फ़ीर्स : तबीयत कुछ अच्छी नहीं। पहले तो हमारे यहां बॉल-नृत्य में जनरल, नवाब और एडमिरल आते थे, मगर अब हम डाकख़ाने के क्लर्क और स्टेशन मास्टर को बुलवाते हैं और वे भी आते हुए नख़रा दिखाते हैं। मुझे कमज़ोरी महसूस हो रही है। हमारे बड़े मालिक, भगवान को प्यारे हो गये इनके दादा सभी बीमारियों के लिये हमें मुहर लगाने की लाख दिया करते

थे। मैं बीस या इससे ज़्यादा सालों से हर दिन ही लाख का सेवन करता हूं। शायद इसी की बदौलत ज़िन्दा हूं।

याशा: तुम भी बड़ी मुसीबत हो, दादा। (**जम्हाई लेता है**) जल्दी से दूसरी दुनिया की राह लो।

फ़ीर्स: अरे तुम ... बौड़म ! (**बड़बड़ाता है**)

(त्रोफ़ीमोव और ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना हॉल में, फिर दीवानख़ाने में नाचते हैं)

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना: धन्यवाद ! मैं बैठूंगी ... (**बैठती है**) थक गयी।

(आन्या आती है)

आन्या (विह्वलता से): रसोईघर में अभी कोई आदमी कह रहा था कि चेरी की बगिया बिक गयी।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना: किसने ख़रीदी ?

आन्या: यह तो उसने नहीं बताया। चला गया। (**त्रोफ़ीमोव के साथ नाचती है, दोनों हॉल में जाते हैं**)

याशा: वहां एक बुड्ढा यह कह रहा था। कोई अजनबी।

फ़ीर्स: लेओनीद अन्द्रेयेविच अभी तक नहीं आये। वह तो हल्का-सा ओवरकोट पहने हुए हैं। ठण्ड खा जायेंगे। ओह, इन जवान लोगों को कभी अक़्ल नहीं आयेगी !

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना: मेरी तो अभी जान निकल जायेगी। याशा, जाकर पता करो कि किसने ख़रीदी है चेरी की बगिया।

याशा: लेकिन वह तो कभी का चला गया, वह बुड्ढा तो। (**हंसता है**)

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना (कुछ नाराज़ होते हुए): तुम्हें किस

बात की हंसी आ रही है? ख़ुश होने की क्या बात है?

याशा: यह येपिख़ोदोव भी ख़ूब है, उस पर हंसी आये बिना नहीं रहती। न किसी काम का, न काज का। नित नयी मुसीबत।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना: फ़ीर्स, अगर जागीर बिक गयी तो तुम कहां जाओगे?

फ़ीर्स: आप जहां जाने का हुक्म देंगी, वहीं चला जाऊंगा।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना: तुम्हारा चेहरा ऐसा मुरझाया-सा क्यों है? तबीयत अच्छी नहीं है क्या? सुनो, जाकर सो जाओ...

फ़ीर्स: हां... (**व्यंग्यपूर्वक**) मैं जाकर सो रहूं तो मेरे बिना कौन यहां सारे काम करेगा, सभी तरह की व्यवस्था करेगा? सारे घर की मुझे ही तो फ़िक्र रहती है।

याशा (ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना से): ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना! आपसे एक प्रार्थना करने की अनुमति चाहता हूं! अगर आप फिर से पेरिस जायें तो मेहरबानी करके मुझे भी अपने साथ लेती जायें। मेरे लिये यहां रहना बिल्कुल असंभव है। (**इधर-उधर देखकर, दबी आवाज़ में**) आपसे कुछ कहने की भला क्या ज़रूरत है, आप तो ख़ुद ही देखती हैं कि यह जाहिलों-अनपढ़ों का देश है, लोगों में धर्म-ईमान नहीं, यहां ऊब से दम निकलता है, खाना बेहूदा मिलता है और फिर यह फ़ीर्स हर वक़्त कुछ बड़बड़ाता, उल्टी-सीधी बातें करता रहता है। इतनी मेहरबानी कीजिये, मुझे अपने साथ ले चलियेगा!

(पीश्चिक आता है)

पीश्चिक: आपको अपने साथ वाल्ज़ नाच नाचने के लिये आमन्त्रित करने की अनुमति चाहता हूं, अतीव सुन्दरी ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना... (**ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना उसके साथ जाती है**) आप यक़ीन मानिये, एक सौ अस्सी रूबल तो मैं हर हालत में आपसे

ले ही लूंगा, जादू करनेवाली देवी जी ... ले ही लूंगा ... (**नाचते हैं**) एक सौ अस्सी रूबल ...

(**हॉल में पहुंच जाते हैं**)

याशा (धीरे-धीरे गुनगुनाता है) : "समझ सकोगी क्या तुम मेरे दिल की बेचैनी ..."

(हॉल में ऊंचा टोप और चौखानेदार पतलून पहने एक आकृति दिखाई देती है जो ज़ोर से हाथ हिलाती और उछलती-कूदती है। "शाबाश, शर्लोत्ता इवानोव्ना, शाबाश !" आवाज़ें सुनाई देती हैं)

दुन्याशा (पाउडर लगाने के लिये रुकती है) : छोटी मालिकिन ने मुझसे नाचने को कहा है, क्योंकि पुरुष अधिक और महिलायें कम हैं। लेकिन मेरा तो नाच से सिर चकराने और दिल धड़कने लगता है। फ़ीर्स निकोलायेविच, डाकख़ाने के क्लर्क ने अभी-अभी मुझसे ऐसी बात कही कि मेरी तो ऊपर की सांस ऊपर और नीचे की नीचे रह गयी।

(**संगीत धीमा हो जाता है**)

फ़ीर्स : क्या कहा उसने तुझसे ?

दुन्याशा : उसने कहा कि आप तो फूल जैसी हैं।

याशा (जम्हाई लेता है) : बदतमीज़ी है ... (**जाता है**)

दुन्याशा : फूल जैसी हैं ... मैं तो ऐसी नाजुक लड़की हूं, प्यारे-प्यारे शब्द मुझे बहुत अच्छे लगते हैं।

फ़ीर्स : उलटे चक्कर में पड़ जायेगी तू।

(**येपिख़ोदोव आता है**)

येपिख़ोदोव: अव्दोत्या फ़्योदोरोव्ना, आप तो मुझसे कन्नी काटती रहती हैं... जैसे कि मैं कोई कीड़ा-मकोड़ा होऊं। (**आह भरता है**) हाय, ज़िन्दगी!

दुन्याशा: आप क्या चाहते हैं?

येपिख़ोदोव: बेशक, शायद आप ठीक ही हों। (**आह भरता है**) किन्तु यदि एक दृष्टिकोण से देखा जाये तो आप मुझे इस तरह से अपने को अभिव्यक्त करने, साफ़-साफ़ बात कहने के लिये क्षमा करें कि आपने ही मेरे दिल की ऐसी हालत कर दी है। अपनी तक़दीर को मैं जानता हूं, हर दिन ही मुझ पर कोई न कोई मुसीबत आती रहती है। लेकिन मैं बहुत पहले से ही इसका आदी हो चुका हूं और अपनी क़िस्मत पर मुस्कराता रहता हूं। आपने मुझसे वादा किया था और बेशक मैं...

दुन्याशा: आपकी मिन्नत करती हूं कि इस बारे में हम बाद में बात करेंगे और इस समय तो आप मुझे परेशान नहीं करें। इस वक़्त मैं सपने देख रही हूं। (**अपने पंखे से खिलवाड़ करती है**)

येपिख़ोदोव: मुझ पर हर दिन कोई न कोई मुसीबत आती रहती है और मैं, मुझे इस तरह से कहने की अनुमति दीजिये, केवल मुस्कराता रहता हूं, यहां तक कि हंसता भी हूं।

(**हॉल में से वार्या आती है**)

वार्या: तुम अभी तक नहीं गये, सेम्योन? तुमसे जो कुछ भी कहा जाता है, तुम तो उसकी रत्ती भर परवाह नहीं करते। (**दुन्याशा से**) जाओ यहां से, दुन्याशा। (**येपिख़ोदोव से**) बिलियर्ड खेलने लगे और उसका डंडा तोड़ दिया, अब मेहमान की तरह दीवानख़ाने में चहलक़दमी कर रहे हो।

येपिख़ोदोव : मुझे यह कहने की इजाज़त दीजिये कि आप मुझसे जवाबतलबी नहीं कर सकतीं।

वार्या : मैं जवाबतलबी नहीं कर रही हूं, सिर्फ़ कह रही हूं। बस, इधर से उधर घूमते रहते हो, कोई काम-काज नहीं करते। तुम्हें यहां क्लर्क रखा हुआ है – मालूम न जाने किसलिये।

येपिख़ोदोव (बुरा मानते हुए) : मैं काम करता हूं या घूमता हूं, खाता-पीता हूं या बिलियर्ड खेलता हूं, इस सबके बारे में सयाने और बड़ी उम्र के लोग ही अपनी राय ज़ाहिर कर सकते हैं।

वार्या : तुम मुझसे यह कहने की हिम्मत रखते हो! (**भड़ककर**) तुम्हारी यह मजाल? मतलब यह कि मैं कुछ भी नहीं जानती-समझती? चलो, दफ़ा हो जाओ यहां से! इसी वक़्त!

येपिख़ोदोव (डरकर) : आपसे प्रार्थना करता हूं कि आप ऐसे नहीं बोलें।

वार्या (आपे से बाहर होकर) : इसी वक़्त दफ़ा हो जाओ यहां से! इसी वक़्त!

(वह दरवाज़े की तरफ़ जाता है और वार्या भी उसके पीछे-पीछे जाती है)

नित नई मुसीबत! ख़बरदार, जो तुम्हारी छाया भी यहां नज़र आये! ख़बरदार, जो मेरी आंखों के सामने आये!

(येपिख़ोदोव बाहर जाता है। दरवाज़े के बाहर से उसकी आवाज़ सुनाई देती है: "मैं आपके ख़िलाफ़ शिकायत करूंगा।")

तो तुम वापस आ रहे हो? (**दरवाज़े के पास फ़ीर्स द्वारा रखी छड़ी उठा लेती है**) आओ... आओ ... आओ, देखना, मैं

तुम्हारी कैसी ख़बर लेती हूं... वापस आ रहे हो? आ रहे हो न? तो लो मज़ा... (**छड़ी घुमाती है और इसी वक़्त लोपाखिन प्रवेश करता है**)

लोपाखिन : बहुत, बहुत आभारी हूं आपका।

वार्या (ग़ुस्से और मज़ाक़ से) : क्षमा चाहती हूं!

लोपाखिन : कोई बात नहीं। ऐसे मधुर स्वागत के लिये हृदय से धन्यवाद देता हूं।

वार्या : धन्यवाद की ज़रूरत नहीं। (**जाती है, फिर पीछे मुड़कर देखती है और नम्रता से पूछती है**) आपको कहीं चोट तो नहीं लग गयी?

लोपाखिन : नहीं, ऐसा कुछ नहीं हुआ। बस, बड़ा-सा गुमटा उभर आया है।

(हॉल में आवाज़ सुनाई देती है : "लोपाखिन आ गया! येर्मोलाई अलेक्सेयेविच आ गया!")

पीश्चिक : मैं उसे अपनी आंखों से देखूं, अपने कानों से सुनूं... (**लोपाखिन और पीश्चिक एक-दूसरे को चूमते हैं**) मेरे प्यारे, मेरे दोस्त, तुमसे तो ब्रांडी की महक आ रही है। हम भी यहां अपना दिल ख़ुश कर रहे हैं।

(ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना आती है)

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : अरे, यह आप हैं, येर्मोलाई अलेक्सेयेविच? इतनी देर किसलिये कर दी? लेओनीद कहां है?

लोपाखिन : लेओनीद अन्द्रेयेविच मेरे साथ ही आये हैं। अभी आ जायेंगे...

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना (बेचैनी से) : तो वहां क्या हुआ ? नीलाम हुआ ? बताइये न।

लोपाख़िन (घबराहट महसूस करते हुए कि कहीं उसकी ख़ुशी ज़ाहिर न हो जाये) : नीलाम तो चार बजे के क़रीब ख़त्म हो गया था... हम गाड़ी न पकड़ पाये और इसलिये साढ़े नौ बजे तक इन्तज़ार करना पड़ा। **(गहरी सांस लेता है)** ओह ! मेरा थोड़ा सिर चकरा रहा है...

(गायेव आता है, उसके दायें हाथ में ख़रीदा हुआ सामान है, बायें हाथ से वह आंसू पोंछता है)

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : ल्योन्या, क्या हुआ वहां ? बोलो न ल्योन्या ? **(आंसू भरकर अधीरता से)** भगवान के लिये जल्दी से बताओ न...

गायेव (कोई जवाब नहीं देता, सिर्फ़ हाथ झटककर रह जाता है। रोते हुए फ़ीर्स से) : यह ले लो... यहां हेरिंग और खाने का कुछ दूसरा सामान है... मैंने आज एक दाना तक मुंह में नहीं डाला... कितना कुछ सहना पड़ा है मुझे !

(बिलियर्ड के कमरे का दरवाज़ा खुला है, वहां से गेंदों के टकराने और याशा की आवाज़ सुनाई देती है : "सात और अठारह ! " गायेव के चेहरे का भाव बदल जाता है, वह रोना बन्द कर देता है)

थककर चूर-चूर हो गया हूं। फ़ीर्स, ज़रा मेरे कपड़े तो बदलवा दो।

(हॉल को लांघते हुए अपने कमरे में जाता है, उसके पीछे-पीछे फ़ीर्स भी)

पीश्चिक : नीलाम में क्या हुआ? बताओ तो!

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : चेरी की बगिया बिक गयी?

लोपाख़िन : बिक गयी।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : किसने ख़रीदी?

लोपाख़िन : मैंने।

(ख़ामोशी)

(इस ख़बर से ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना का बुरा हाल हो जाता है। वह अगर कुर्सी और मेज़ के पास न खड़ी होती तो गिर पड़ती। वार्या कमरे से चाबियों का गुच्छा निकालती है और उसे दीवान-ख़ाने के बीचोंबीच फ़र्श पर फेंककर चली जाती है)

मैंने ख़रीदी है। महानुभावो, कृपया ज़रा रुक जाइये, मेरा सिर चकरा रहा है, मुझसे बोला नहीं जा रहा... **(हंसता है)** हम नीलाम में पहुंचे, देरीगानोव वहां पहले से मौजूद था। लेओनीद अन्द्रेयेविच के पास सिर्फ़ पन्द्रह हज़ार रूबल थे और देरीगानोध ने बक़ाया क़र्ज़ के अलावा तीस हज़ार की बोली दी। मैंने देखा कि मामला चौपट हो रहा है, मैं सामने आ गया और मैंने चालीस हज़ार की बोली दे दी। उसने पैंतालीस हज़ार कहे, मैंने पचपन। मतलब यह कि वह पांच हज़ार बढ़ाता रहा और मैं दस... आख़िर बोली ख़त्म हुई। मैंने बक़ाया क़र्ज़ के अलावा नब्बे हज़ार कहे और बोली मेरे नाम पर छूट गयी। चेरी की बगिया अब मेरी है। मेरी है! **(खिलखिलाकर हंसता है)** हे भगवान, हे ईश्वर, चेरी की बगिया मेरी है! मुझसे कहिये कि मैं नशे में हूं, कि मेरा दिमाग़ चल निकला है, कि मैं यह केवल सपना देख रहा हूं... **(पांव पटकता है)** मुझ पर हंसिये नहीं! काश मेरे बाप-दादा क़ब्रों से बाहर आकर यह सब देख

सकते कि कैसे उनके येर्मोलाई ने, उनके निकम्मे, बुद्धू येर्मोलाई ने, जो जाड़े में नंगे पांव भागा फिरता था, कैसे उसी येर्मोलाई ने वह जागीर ख़रीद ली है जिससे बढ़कर कोई जागीर दुनिया में नहीं है। मैंने वह जागीर ख़रीद ली है जहां मेरे पिता और दादा भूदास थे, जहां उन्हें रसोईघर तक नहीं जाने दिया जाता था। शायद मैं नींद में हूं, मुझे यह सपना-सा लग रहा है, सिर्फ़ ऐसे प्रतीत हो रहा है... यह तो केवल मेरी अज्ञानता के कोहरे से ढकी कल्पना की उड़ान है।... (**स्नेहपूर्वक मुस्कराते हुए चाबियों का गुच्छा उठाता है**)वार्या ने चाबियां फेंक दीं, यह दिखाना चाहती है कि वह यहां की मालिकिन नहीं है... (**चाबियां बजाता है**)ख़ैर, कोई बात नहीं।

(**आर्केस्ट्रा के बाजों को सुर में करने की आवाज़ सुनाई देती है**)

अरे ओ बजवैयो, बजाओ बाजे, मैं सुनना चाहता हूं! सभी यह देखने आना कि कैसे येर्मोलाई लोपाख़िन कुल्हाड़ा लेकर चेरी की बगिया को काटेगा, कैसे पेड़ कट-कटकर धरती पर गिरेंगे! यहां हम बंगले बनायेंगे और हमारे पोते-परपोते यहां नयी ज़िन्दगी को देख सकेंगे... बजवैयो, बजाओ बाजे!

(**संगीत बजता है। ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना कुर्सी पर बैठकर ज़ार-ज़ार रोती है**)

•

(**भर्त्सना करते हुए**) किसलिये, किसलिये आपने मेरी बात नहीं मानी? ओह बेचारी, अच्छी ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना, जो हो गया, उसे अब लौटाया नहीं जा सकता। (**आंसू भरकर**) काश, यह सब कुछ जल्दी से ख़त्म हो जाता, काश, किसी तरह हमारी

यह बेहूदा, दुख-दर्दों की मारी ज़िन्दगी जल्दी से बदल जाती।

पीश्चिक (उसकी बांह थामकर, दबी आवाज़ में) : वह रो रही है। आओ हॉल में चलें, उसे यहां अकेली रहने दें... आओ चलें **(उसकी बांह में बांह डालकर हॉल में ले जाता है)**

लोपाख़िन : यह क्या हो रहा है? बाजेवालो, अच्छी तरह से बाजे बजाओ! जैसे मैं चाहता हूं, सब कुछ वैसे ही होना चाहिये! **(व्यंग्यपूर्वक)** नया ज़मींदार, चेरी की बगिया का नया मालिक आ रहा है! **(अचानक एक छोटी-सी मेज़ से टकरा जाता है, उस पर रखा हुआ शमादान गिरते-गिरते बचता है)** मैं हर चीज़ की क़ीमत अदा कर सकता हूं। **(पीश्चिक के साथ चला जाता है)**

(हॉल और दीवानख़ाने में ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना के सिवा कोई नहीं रह जाता जो सिकुड़-सिमटकर बैठी हुई फूट-फूटकर रोती है। संगीत धीरे-धीरे बजता रहता है। आन्या और त्रोफ़ीमोव तेज़ी से आते हैं। आन्या मां के पास आकर उसके सामने घुटनों के बल हो जाती है। त्रोफ़ीमोव दरवाज़े के पास खड़ा रहता है)

आन्या : अम्मां!.. अम्मां, तुम रो रही हो? मेरी प्यारी, दयालु, मेरी अच्छी, मेरी सुन्दर अम्मां, मैं तुम्हें प्यार करती हूं... तुम्हारे लिये भगवान से प्रार्थना करती हूं। चेरी की बगिया बिक गयी, वह अब हमारी नहीं रही। यह सच है, सच है, लेकिन तुम रोओ नहीं। अभी तो तुम्हारी ज़िन्दगी तुम्हारे सामने है, तुम्हारी अच्छी निर्मल आत्मा तुम्हारे पास है... आओ, मेरे साथ चलो, मेरी प्यारी अम्मां, आओ, यहां से चलें!.. हम एक नया बाग़ लगायेंगे, इससे कहीं अच्छा बाग़! तुम उसे

देखोगी और सब कुछ समझ आओगी। तुम्हारी आत्मा सन्ध्या के डूबते सूरज के प्रकाश की तरह हल्की-हल्की और गहन प्रसन्नता से ओत-प्रोत हो उठेगी और तुम मुस्करा दोगी ! आओ, चलें मेरी प्यारी अम्मां ! आओ चलें ! ..

(परदा गिरता है)

चौथा अंक

(पहले अंक जैसी मंच-सज्जा। खिड़कियों पर परदे नहीं हैं, दीवारों पर तस्वीरें भी नहीं, थोड़ा-सा फ़र्नीचर एक कोने में मानो बेचने के लिये इकट्ठा कर दिया गया है। घर ख़ाली-ख़ाली-सा लग रहा है। बाहर के दरवाज़े और दूर मंच पर सूटकेस और गठरियों में बंधा हुआ सफ़र का सामान आदि रखा है। बायीं ओर का दरवाज़ा खुला है, जहां से वार्या और आन्या की आवाज़ें सुनाई दे रही हैं। लोपाख़िन खड़ा हुआ इन्तज़ार कर रहा है। याशा शेम्पेन से भरे हुए गिलासों की ट्रे हाथ में लिये है। ड्योढ़ी में येपिख़ोदोव बक्स बांध रहा है। नेपथ्य में दबा-घुटा शोर सुनाई दे रहा है। यह किसानों का शोर है जो विदा लेने के लिये आये हैं। गायेव की आवाज: "शुक्रिया भाइयो, शुक्रिया।")

याशा : मामूली किसान लोग विदा लेने आये हैं। येर्मोलाई अलेक्सेयेविच, मेरी यह राय है कि मामूली लोग दयालु, मगर बहुत कम समझदार होते हैं।

(शोर बन्द हो जाता है। ड्योढ़ी में से ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना और गायेव आते हैं। ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना रो नहीं रही, किन्तु उसके चेहरे का रंग उड़ा हुआ है, वह कांप रहा है, उसके लिये बात करना सम्भव नहीं)

गायेव : बहन, तुमने उन्हें अपना पर्स दे दिया। यह ठीक नहीं! ऐसा नहीं करना चाहिये था!

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : मैं और कुछ कर ही नहीं सकती थी! कर ही नहीं सकती थी!

(**दोनों जाते हैं**)

लोपाखिन (**उनके पीछे-पीछे, दरवाज़े की तरफ़ मुंह करके**) : आपसे बिनती करता हूं! जाने से पहले शेम्पेन का एक-एक गिलास पीने की कृपा करें। मैं शहर से शेम्पेन लाना भूल गया और स्टेशन पर सिर्फ़ एक ही बोतल मिली। मेहरबानी कीजिये!

(**ख़ामोशी**)

तो आप लोग नहीं पीना चाहते? (**दरवाज़े से हट जाता है**) अगर मालूम होता कि आप नहीं पियेंगे तो ख़रीदता ही नहीं। तो मैं भी नहीं पियूंगा।

(**याशा ट्रे को सावधानी से कुर्सी पर रख देता है**)

और कोई नहीं पीता तो तुम ही पी लो, याशा।

याशा : सफ़र के लिये! यहां रहनेवालों के सुख के लिये। (**पीता है**) आपको यक़ीन दिला सकता हूं कि यह असली शेम्पेन नहीं है।

लोपाखिन : आठ रूबल की बोतल है।

(**ख़ामोशी**)

बेहद ठण्ड है यहां तो।

याशा : आज घर को गर्माया नहीं गया। ख़ैर, हमारी बला से, हम तो जा ही रहे हैं। (**हंसता है**)

लोपाखिन : हंस किसलिये रहे हो?

याशा : ख़ुशी की वजह से।

लोपाखिन : अक्तूबर आ गया है, मगर गर्मी के दिनों की भांति शान्ति है और धूप खिली है। मकान बनाने के लिये

अच्छा मौसम है। (**घड़ी पर नज़र डालकर दरवाज़े की तरफ़ मुंह करके कहता है**) महानुभावो, यह ध्यान में रखिये कि गाड़ी के लिये सिर्फ़ छियालीस मिनट बाक़ी रह गये हैं। इसका मतलब यह है कि बीस मिनट बाद स्टेशन को चल देना चाहिये। जल्दी कीजिये।

(**ओवरकोट पहने हुए त्रोफ़ीमोव अहाते की तरफ़ से आता है**)

त्रोफ़ीमोव: मुझे लगता है कि अब चल देना चाहियें। बग्घी आ गयी है। शैतान ही जाने कि मेरे गलोश* कहां चले गये। (**दरवाज़े की तरफ़ मुंह करके**) आन्या, मेरे गलोश यहां नहीं हैं! अभी तक नहीं मिले।

लोपाख़िन: मुझे ख़ार्कोव जाना है। आपके वाली गाड़ी से ही जाऊंगा। जाड़े भर ख़ार्कोव में ही रहूंगा। मैं तो आप लोगों के साथ ही वक़्त बरबाद करता रहा, काम-काज के बिना मन ऊब उठा है। मुझसे निठल्ले तो बैठा ही नहीं जाता, समझ में नहीं आता कि अपने इन हाथों का क्या करूं। ऐसे लगते हैं मानों पराये हों।

त्रोफ़ीमोव: हम लोग तो अभी चले जायेंगे और आप फिर से अपने उपयोगी श्रम में जुट जाइयेगा।

लोपाख़िन: शेम्पेन का एक गिलास पी लो।

त्रोफ़ीमोव: नहीं पिऊंगा।

लोपाख़िन: तो अब मास्को जाओगे?

त्रोफ़ीमोव: हां, इन्हें शहर तक पहुंचाकर कल मास्को चला जाऊंगा।

---

* चमड़े के जूतों को कीचड़-पानी से बचाने के लिये उनके ऊपर पहने जानेवाले रबड़ के जूते। – अनु०

लोपाखिन: हां... शायद वहां प्रोफ़ेसर व्याख्यान नहीं देते होंगे, राह देख रहे होंगे कि तुम कब आते हो!

त्रोफ़ीमोव: तुम्हें इससे कोई मतलब नहीं।

लोपाखिन: कितने सालों से तुम युनिवर्सिटी में पढ़ रहे हो?

त्रोफ़ीमोव: कोई नयी बात सोचो। यह पुराना और घिसा-पिटा क़िस्सा है। (**गलोश ढूंढ़ता है**) सुनो, शायद हम अब फिर कभी न मिलें, इसलिये जाने से पहले एक सलाह देने की इजाज़त चाहता हूं – हाथों को ऐसे नहीं झुलाओ! हाथों को ऐसे बेकार झुलाते रहने की आदत छोड़ दो। इसी तरह से यह सोचते हुए गर्मियों के बंगले बनाना भी हाथों को बेकार इधर-उधर झुलाने के समान ही है कि कुछ समय बाद यहां बसनेवाले लोग ख़ुदकाश्त बन जायेंगे... ख़ैर, जो भी हो, मैं तुम्हें चाहता हूं। किसी कलाकार की तरह तुम्हारी पतली-पतली और नाज़ुक उंगलियां हैं, कोमल और नाज़ुक आत्मा है...

लोपाखिन (उसे गले लगाता है): तो विदा, मेरे दोस्त। सभी कुछ के लिये तुम्हें धन्यवाद। अगर ज़रूरत हो तो सफ़र के लिये मुझसे कुछ पैसे ले लो।

त्रोफ़ीमोव: मुझे उनका क्या करना है? कोई ज़रूरत नहीं।

लोपाखिन: तुम्हारे पास हैं जो नहीं!

त्रोफ़ीमोव: मेरे पास हैं। धन्यवाद। मैंने जो अनुवाद किया था, उसके पैसे मिल गये। ये रहे, जेब में। (**परेशान होते हुए**) लेकिन मेरे गलोश नहीं मिले!

वार्या (दूसरे कमरे से): यह ले लीजिये अपना कूड़ा-करकट! (**मंच पर गलोशों का जोड़ा फेंकती है**)

त्रोफ़ीमोव: आप ऐसे बिगड़ क्यों रही हैं, वार्या! हुम... लेकिन ये तो मेरे गलोश नहीं हैं!

लोपाखिन: मैंने वसन्त में एक हज़ार से ज़्यादा हेक्टर ज़मीन

में पोस्ता बोया था और अब चालीस हज़ार का मुनाफ़ा कमाया है। मेरे पोस्ता पर जब फूल आये तो क्या दृश्य था वह! हां, तो मैं कह रहा था कि मैंने चालीस हज़ार कमाये हैं और तुम्हें इसलिये उधार देने को तैयार हूं कि ऐसा कर सकता हूं। नाक किसलिये चढ़ाते हो? मैं तो किसान आदमी हूं... हेर-फेर नहीं जानता।

त्रोफ़ीमोव: तुम्हारा बाप किसान था, मेरा दवा बेचनेवाला – इससे कोई नतीजा नहीं निकलता।

(लोपाख़िन बटुआ निकालता है)

रहने दो, रहने दो... अगर तुम मुझे दो लाख भी देना चाहोगे तो भी नहीं लूंगा। मैं आज़ाद आदमी हूं। तुम सब, अमीर-ग़रीब लोग जिस चीज़ को इतना मूल्यवान और महत्वपूर्ण मानते हो, मेरे लिये उसकी ज़रा भी क़ीमत नहीं, मेरे लिये वह हवा में उड़नेवाली धूल-मिट्टी है। मेरा तुम लोगों के बिना काम चल सकता है, मुझे तुम लोगों की परवाह करने की कोई ज़रूरत नहीं। मुझमें शक्ति है, आत्म-सम्मान है। मानवजाति उस सर्वोच्च सत्य, उस सर्वोच्च सुख-सौभाग्य की ओर बढ़ रही है जो हमारी इस धरती पर सम्भव है और मैं उसकी अगली क़तारों में हूं!

लोपाख़िन: तुम वहां पहुंच जाओगे?

त्रोफ़ीमोव: पहुंच जाऊंगा।

(ख़ामोशी)

ख़ुद पहुंच जाऊंगा या फिर दूसरों को पहुंचने का रास्ता दिखा दूंगा।

(**दूरी पर कुल्हाड़े से वृक्ष के काटे जाने की आवाज़ सुनाई देती है**)

लोपाख़िन : तो विदा, मेरे दोस्त। चलने का वक़्त हो गया। हम एक-दूसरे के सामने अपनी अकड़ दिखा रहे हैं, जबकि ज़िन्दगी अपनी चाल से चलती जा रही है। जब मैं थके बिना लगातार घण्टों काम करता हूं तो मेरे दिमाग़ को बड़ा चैन मिलता है और लगता है कि मैं भी अपने जीवन का लक्ष्य जानता हूं। लेकिन मेरे भैया, कितने ऐसे लोग हैं रूस में, जो मालूम नहीं किसलिये जीते हैं। ख़ैर, काम तो उनके बिना भी चलता ही रहता है। सुना है कि लेओनीद अन्द्रेयेविच ने बैंक में छः हज़ार सालाना की नौकरी कर ली है ... मगर उनसे यह नौकरी निभेगी नहीं, बहुत काहिल हैं वह ...

आन्या (**दरवाज़े पर आकर**) : अम्मां आपसे अनुरोध करती हैं कि उनके यहां से जाने तक पेड़ों को न काटा जाये।

त्रोफ़ीमोव : हां, कम से कम इतनी अक़्ल तो होनी चाहिये ... (**ड्योढ़ी में से जाता है**)

लोपाख़िन : अभी, अभी रोक देता हूं ... सचमुच बडी बेवक़ूफ़ी है। (**उसके पीछे-पीछे जाता है**)

आन्या : फ़ीर्स को अस्पताल भेज दिया गया?

याशा : मैंने सुबह कह दिया था। भेज दिया गया होगा।

आन्या (**हॉल में से गुज़रते हुए येपिख़ोदोव से**) : सेम्योन पनतेलेयेविच, कृपया यह पता कीजिये कि फ़ीर्स को अस्पताल भेज दिया गया या नहीं।

याशा (**बुरा मानते हुए**) : मैंने आज सुबह येगोर से कह दिया था। दस बार पूछने की क्या बात है!

येपिख़ोदोव : बहुत बूढ़ा हो चुका है फ़ीर्स और उसके बारे में मेरी अन्तिम राय यह है कि दवा-दारू से अब उसका कुछ

भला नहीं होगा, उसे तो अपने बाप-दादा के पास पहुंच जाना चाहिये। मुझे तो उससे केवल ईर्ष्या ही हो सकती है। **(गत्ते के टोपीवाले डिब्बे पर सूटकेस रखता है और उसे कुचल डालता है)** लो, टूट गया। मैं जानता था कि यही होगा। **(जाता है)**

याशा (मज़ाक़ उड़ाते हुए) : नित नयी मुसीबत ...

वार्या (दरवाज़े के पीछे से) : फ़ीर्स को अस्पताल पहुंचा दिया गया ?

आन्या : हां, पहुंचा दिया गया।

वार्या : तो डाक्टर के नाम ख़त क्यों नहीं ले गये ?

आन्या : हमें अभी जल्दी से भेज देना चाहिये ... **(जाती है)**

वार्या (बग़ल के कमरे से) : याशा कहां है ? उससे कहिये कि उसकी मां उसके जाने के पहले उससे मिलने आयी है।

याशा (हाथ झटकता है) : किसी के भी सब्र का प्याला छलक सकता है।

(दुन्याशा सामान को ठीक-ठाक करने में व्यस्त रहती है। याशा के अकेले रह जाने पर वह उसके पास आती है)

दुन्याशा : काश, मेरी तरफ़ एक बार देख ही लेते, याशा। तुम जा रहे हो ... मुझे छोड़कर जा रहे हो, याशा ... **(रोती है और उसके गले में बांहें डाल देती है)**

याशा : रोने की क्या बात है ? **(शेम्पेन पीता है)** छः दिन बाद मैं फिर से पेरिस पहुंच जाऊंगा। कल एक्सप्रेस गाड़ी में बैठेंगे और मानो उड़ते चले जायेंगे। मुझे तो यक़ीन ही नहीं होता। फ़्रांस ज़िन्दाबाद !.. यह जगह मेरे लायक़ नहीं, मैं यहां नहीं रह सकता ... कोई चारा नहीं। बहुत जहालत देख ली यहां – काफ़ी है। **(शेम्पेन पीता है)** रोने की क्या बात है ? ढंग की ज़िन्दगी बिताओ और तब रोना नहीं पड़ेगा।

दुन्याशा (जेबी दर्पण में अपने चेहरे को देखते हुए पाउडर लगाती है) : पेरिस से पत्र भेजना। मैं तो तुमको प्यार करती थी, बहुत प्यार करती थी, याशा! बड़ी नाज़ुक हूं मैं, याशा!

याशा : लोग इधर आ रहे हैं। **(सूटकेसों के पास अपनी व्यस्तता दिखाने लगता है, धीरे-धीरे गुनगुनाता है)**

(ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना, गायेव, आन्या और शर्लोत्ता आते हैं)

गायेव : हमें अब चलना चाहिये। बहुत थोड़ा वक़्त रह गया है। **(याशा की तरफ़ देखकर)** यह हेरिंग मछली की बू किससे आ रही है?

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : दस मिनट के बाद हमें बग्घी में बैठ जाना चाहिये... **(कमरे में नज़र घुमाकर)** विदा, हमारे प्यारे घर, हमारे बूढ़े दादा। जाड़ा बीतेगा, वसन्त आयेगा और तब तुम नहीं रहोगे, तुम्हें तोड़ दिया जायेगा। कितना कुछ देखा है इन दीवारों ने! **(बेटी को ज़ोर से चूमती है)** मेरी लाड़ली, मेरी दौलत, तुम बहुत ख़ुश नज़र आ रही हो, तुम्हारी आंखें तो दो हीरों की तरह चमक रही हैं। तुम ख़ुश हो? बहुत ख़ुश हो?

आन्या : बहुत! नयी ज़िन्दगी शुरू हो रही है, अम्मां!

गायेव (प्रसन्नता से) : सचमुच अब सब कुछ बहुत अच्छा है। चेरी की बगिया के बिकने तक हम सब बहुत चिन्तित रहे, परेशान रहे। किन्तु जब मामला आख़िरी तौर पर, अन्तिम रूप से तय हो गया तो सब को राहत मिल गयी, कुछ ख़ुशी भी हुई... मैं अब बैंक का क्लर्क हूं, महाजनी करता हूं... पीला गेंद बीच की पाकेट में। बहन ल्यूबा, अब तो तुम भी निश्चय ही पहले से अच्छी दिख रही हो।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : हां। यह सच है कि मेरा मन पहले से शान्त है।

(उसे ओवरकोट और टोपी दी जाती है)

मुझे नींद अच्छी आती है। याशा, मेरी चीज़ें ले चलो। जाने का वक़्त हो गया। **(आन्या से)** मेरी बिटिया, हम जल्द ही मिलेंगी... मैं पेरिस जा रही हूं, वहां उन पैसों से गुज़ारा करूंगी जो तुम्हारी यारोस्लाव्ल वाली नानी ने जागीर ख़रीदने को भेजे थे – ज़िन्दा-बाद तुम्हारी नानी! लेकिन इन पैसों से बहुत दिनों तक काम नहीं चलेगा।

आन्या : अम्मां, तुम जल्दी, बहुत जल्दी लौट आओगी... ठीक है न? मैं हाई स्कूल के इम्तहान की तैयारी करूंगी, उसे पास करके काम करने लगूंगी, तुम्हारी मदद करूंगी। अम्मां, हम मिलकर तरह-तरह की किताबें पढ़ा करेंगी... ठीक है न? **(अम्मां के हाथ चूमती है)** हम पतझर की शामों में पढ़ा करेंगी, अनेक किताबें पढ़ डालेंगी और हमारे सामने एक नयी, अनूठी दुनिया उभर उठेगी... **(स्वप्न-सा देखते हुए)** अम्मां, जल्दी लौट आना...

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : लौट आऊंगी, मेरी हीरे-सी बिटिया। **(बेटी को बांहों में भरती है)**

(लोपाख़िन आता है, शर्लोत्ता धीरे-धीरे कोई गीत गुनगुनाती है)

गायेव : शर्लोत्ता ख़ुश है! गा रही है!

शर्लोत्ता (लिपटे-लिपटाये बच्चे जैसा लगनेवाला एक बंडल लेकर) : सो, मेरे मुन्ने, सो...

(बच्चे के रोने की आवाज़ सुनाई देती है : "हुआं-हुआं!")

चुप हो जा, मेरे अच्छे, मेरे प्यारे मुन्ने।

(**हुआं-हुआं !**)

मुझे बड़ा तरस आ रहा है तुम पर ! (**बंडल को वापस उसकी जगह पर फेंक देती है**) तो आप लोग कृपया, मेरे लिये नौकरी ढूंढ़ दें। मेरा ऐसे काम नहीं चल सकता।

लोपाख़िन : ढूंढ़ देंगे नौकरी, शर्लोत्ता इवानोव्ना। कुछ चिन्ता नहीं करें।

गायेव : सब हमें छोड़कर जा रहे हैं, वार्या भी जा रही है ... अचानक किसी को भी हमारी ज़रूरत नहीं रही।

शर्लोत्ता : शहर में मेरे रहने की कोई जगह नहीं। इसलिये जाना ही होगा ... (**गुनगुनाती है**) ख़ैर, कोई बात नहीं ...

(**पीश्चिक आता है**)

लोपाख़िन : लीजिये, आ गया क़ुदरत का एक अजूबा ! ..

पीश्चिक (हांफते हुए) : ओह, ज़रा सांस लेने दीजिये ... बुरा हाल है मेरा ... मेरे बहुत अच्छे मित्रो ... मुझे पानी दीजिये ...

गायेव : शायद पैसों की ज़रूरत है ? आपका यह सेवक तो मुसीबत से दूर ही रहना चाहता है ... (**जाता है**)

पीश्चिक : बहुत दिनों से आपके यहां नहीं आया ... अनूठी सुन्दरी ... (**लोपाख़िन से**) तुम भी यहां हो ... मिलकर ख़ुशी हुई ... क्या ग़ज़ब का दिमाग़ पाया है तुमने ... यह लो ... सम्भालो ... (**लोपाख़िन को रक़म देता है**) चार सौ रूबल ... मेरे सिर पर तुम्हारा आठ सौ चालीस रूबल का क़र्ज़ रह गया ...

लोपाख़िन (हैरानी से कंधे झटकता है) : यह तो जैसे कोई सपना ही हो ... कहां से मिले ?

पीश्चिक : ज़रा ठहरो ... बड़ी गर्मी लग रही है ... बड़ी असाधारण घटना घटी है। मेरे यहां कुछ अंग्रेज़ आये और मेरी ज़मीन

में उन्हें कोई सफ़ेद मिट्टी मिल गयी ... (**ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना से**) और ये चार सौ आपकी नज़र हैं, अद्‌भुत, अतीव सुन्दरी ... (**पैसे देता है**) बाक़ी बाद में। (**पानी पीता है**) रेल के डिब्बे में अभी-अभी एक नौजवान कह रहा था कि मानो कोई बहुत बड़ा दार्शनिक छत से कूदने की सलाह देता है ... "कूद जाओ!" उसका कहना है और इसी में जीवन का सार है। (**हैरानी से**) ज़रा ग़ौर कीजिये! पानी!..

लोपाख़िन : कौन अंग्रेज़ थे ये?

पीश्चिक : मैंने सफ़ेद मिट्टीवाली ज़मीन का टुकड़ा उन्हें चौबीस सालों के लिये पट्टे पर दे दिया ... और अब माफ़ी चाहता हूं, रुक नहीं सकता ... झटपट आगे जाना चाहिए ... ज़्नोइकोव के यहां जाऊंगा ... कर्दामोनोव के यहां जाऊंगा ... सभी का तो क़र्ज़दार हूं ... (**पानी पीता है**) अलविदा ... बृहस्पति को आऊंगा ...

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : हम तो अभी शहर जा रहे हैं और मैं कल विदेश के लिये रवाना हो जाऊंगी ...

पीश्चिक : क्या मतलब? (**परेशान होकर**) किसलिये शहर जा रही हैं? हां, हां, यह फ़र्नीचर ... सूटकेस ... ख़ैर, कोई बात नहीं ... (**आंसू भरकर**) कोई बात नहीं ... बहुत ग़ज़ब का दिमाग़ है ... इन अंग्रेज़ों का ... कोई बात नहीं ... सुखी रहिये ... भगवान आपकी मदद करेगा ... कोई बात नहीं ... इस दुनिया में हर चीज़ का अन्त होता है ... (**ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना का हाथ चूमता है**) कभी आपको यह भी ख़बर मिलेगी कि मैं इस दुनिया में नहीं रहा, आपको यह ... घोड़ा याद आ जायेगा और आप कहेंगी : "इस दुनिया में कोई एक होता था – सिमेओनोव-पीश्चिक ... भगवान उसकी आत्मा को शान्ति दे" ... बहुत ही प्यारा मौसम है ... हां ... (**बहुत विह्वल होकर जाता है, किन्तु उसी क्षण लौटता**

है **और दरवाज़े के पास से कहता है**) मेरी बिटिया दाशा ने आपको नमस्कार कहा है! (**जाता है**)

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना: अब हम चल सकते हैं। मैं अपने मन में दो चिन्तायें लिये जा रही हूं। मेरी पहली चिन्ता तो बीमार फ़ीर्स के बारे में है। (**घड़ी पर नज़र डालती है**) पांच मिनट और रुका जा सकता है...

आन्या: अम्मां, फ़ीर्स को तो अस्पताल भेजा जा चुका है। याशा ने सुबह भेज दिया था।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना: मेरी दूसरी परेशानी है – वार्या। वह तड़के ही उठकर काम में जुट जाने की आदी है और अब काम न होने पर ऐसे ही महसूस करती है जैसे पानी के बिना मछली! वह दुबला और मुरझा गयी है और बेचारी रोती रहती है...

(**ख़ामोशी**)

आप तो यह अच्छी तरह से जानते हैं, येर्मोलाई अलेक्सेयेविच। मैं तो यही सपना देखती रही कि उसकी आपसे शादी करूंगी। सभी बातों से ऐसा लगता भी था कि आप उससे शादी कर लेंगे। (**वह फुसफुसाकर आन्या के कान में कुछ कहती है, वह शर्लोत्ता को संकेत करती है और दोनों बाहर चली जाती हैं**) वह आपको प्यार करती है, आपको भी वह अच्छी लगती है और इसलिये समझ नहीं पाती कि आप दोनों क्यों एक-दूसरे से कन्नी काटते हैं। मैं यह समझने में असमर्थ हूं!

लोपाख़िन: सच कहूं तो मैं ख़ुद भी यह नहीं समझ पाता हूं। बड़ा अजीब-सा मामला है यह सब... अगर कुछ वक़्त है तो मैं तो इस समय भी तैयार हूं... लाइये, अभी यह काम कर डालें – और क़िस्सा ख़त्म। मैं अनुभव करता हूं कि आपके बिना मैं विवाह का प्रस्ताव नहीं कर पाऊंगा।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : यह तो बहुत अच्छी बात है। इसके लिये तो एक मिनट ही चाहिये। मैं उसे अभी बुला लेती हूं...

लोपाख़िन : और शेम्पेन भी है। (**गिलासों की तरफ़ देखकर**) ये तो ख़ाली हैं, किसी ने सारी शेम्पेन पी डाली।

(**याशा खांसता है**)

इसे कहते हैं बिल्ली की तरह सब कुछ चाट जाना।

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना (ख़ुश होकर) : बहुत ख़ूब। हम बाहर चले जाते हैं... याशा, चलो। मैं उसे बुलाती हूं... (**दरवाज़े की ओर मुंह करके**) वार्या, सारा काम-धाम छोड़कर यहां आओ। जल्दी से! (**याशा के साथ बाहर जाती है**)

लोपाख़िन (घड़ी पर नज़र डालकर) : हां, यह बात है...

(**ख़ामोशी**)

(**दरवाज़े के पीछे दबी हंसी, फुसफुसाहट सुनाई देती है। आख़िर वार्या आती है**)

वार्या (देर तक सामान को देखती रहती है) : अजीब मामला है, कहीं मिल ही नहीं रही...

लोपाख़िन : आप क्या ढूंढ़ रही हैं?

वार्या : मैंने ख़ुद ही उसे सामान में बांधा था और अब याद नहीं कर पा रही।

(**ख़ामोशी**)

लोपाख़िन : वर्वारा मिख़ाइलोव्ना, अब आप कहां जाने की सोच रही हैं?

वार्या : मैं? रागूलिन परिवार में जा रही हूं ... उनके यहां घर-गिरस्ती के प्रबन्ध की नौकरी तय कर ली है ... आप घर की मैनेजर कह सकते हैं।

लोपाख़िन : ये लोग तो याशनेवो में रहते हैं न? यहां से कोई पचासेक मील दूर।

(ख़ामोशी)

तो इस घर में ज़िन्दगी ख़त्म हो गयी ...

वार्या (सामान को देखते हुए) : कहां रख दिया मैंने उसे ... या शायद सन्दूक़ में बन्द कर दिया ... हां, इस घर में ज़िन्दगी ख़त्म हो गयी ... नहीं होगी अब यहां ज़िन्दगी ...

लोपाख़िन : मैं अभी ख़ार्कोव जा रहा हूं ... इसी गाड़ी से। बहुत सारे काम हैं। यहां येपिख़ोदोव पर सारी ज़िम्मेदारी छोड़े जा रहा हूं ... मैंने उसे अपने यहां रख लिया है।

वार्या : अच्छा किया।

लोपाख़िन : शायद आपको याद हो, पिछले साल इसी वक़्त बर्फ़ गिर रही थी, लेकिन अब शान्ति है, धूप खिली हुई है। हां, ठण्ड ज़रूर है ... शून्य से तीन दर्जे नीचे होगा तापमान।

वार्या : मैंने देखा नहीं।

(ख़ामोशी)

फिर हमारा तापमापी तो टूटा हुआ है ...

(ख़ामोशी)

(अहाते की ओर से दरवाज़े पर आवाज़ सुनाई देती है : "येर्मोलाई अलेक्सेयेविच ! ..")

लोपाख़िन (मानो बहुत देर से इस आवाज़ का इन्तज़ार कर रहा हो) : अभी आ रहा हूं! **(जल्दी से जाता है)**

(वार्या फ़र्श पर बैठकर तथा कपड़ों के एक बंडल पर सिर टिकाकर धीरे-धीरे सिसकती है। दरवाज़ा खुलता है और ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना सावधानी से भीतर आती है)

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना : तो?

(ख़ामोशी)

हमें चलना चाहिये।

वार्या (जिसने आंखें पोंछ ली हैं और रोती नहीं है) : हां, चलना चाहिये, अम्मां। अगर गाड़ी मिल गयी तो मैं आज ही रागूलिन परिवार में पहुंच जाऊंगी...

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना (दरवाज़े के पास जाकर) : आन्या, कपड़े पहन लो!

(आन्या, उसके बाद गायेव और फिर शर्लोत्ता इवानोव्ना आते हैं। गायेव कनटोपेवाला गर्म ओवरकोट पहने है। नौकर और कोचवान भी आ जाते हैं। येपिख़ोदोव सामान के आस-पास दौड़-धूप करता दिखाई देता है)

अब हम रवाना हो सकते हैं।

आन्या (ख़ुशी से) : रवाना हो सकते हैं!

गायेव : मेरे मित्रो, मेरे प्यारे, मेरे अच्छे दोस्तो! हमेशा के लिये इस घर को छोड़ते हुए क्या मैं चुप रह सकता हूं, क्या मैं विदा होते समय उन भावनाओं को व्यक्त किये बिना रह सकता हूं जो मेरे मन में उमड़-घुमड़ रही हैं...

आन्या (मिन्नत करते हुए): मामा जी!

वार्या: मामा जी, इसकी ज़रूरत नहीं है!

गायेव (उदासी से): पीला गेंद बीच की पाकेट में... मैं चुप हूं...

(त्रोफ़ीमोव, उसके बाद लोपाख़िन का प्रवेश)

त्रोफ़ीमोव: तो महानुभावो, चलें!

लोपाख़िन: येपिख़ोदोव, मेरा ओवरकोट!

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना: मैं यहां एक मिनट और बैठना चाहती हूं। पहले तो मैंने मानो कभी यह देखा ही नहीं था कि इस घर की दीवारें कैसी हैं, छतें कैसी हैं और अब मैं उन्हें बड़े चाव से, मृदु प्यार से देख रही हूं...

गायेव: मुझे याद है कि जब मैं सिर्फ़ छः साल का था तो इसी खिड़की में बैठे हुए कैसे मैंने ट्रिनिटी पर्व के दिन पिता जी को गिरजाघर जाते देखा था...

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना: सभी चीज़ें ले लीं न?

लोपाख़िन: लगता तो ऐसा ही है कि सभी चीज़ें ले लीं। **(ओवरकोट पहनते हुए येपिख़ोदोव से)** येपिख़ोदोव, तुम इस बात का ध्यान रखना कि यहां किसी तरह की कोई गड़बड़ न हो।

येपिख़ोदोव (खरखरी आवाज़ में): आप कोई फ़िक्र नहीं करें, येर्मोलाई अलेक्सेयेविच!

लोपाख़िन: यह तुम्हारी आवाज़ को क्या हो गया?

येपिख़ोदोव: अभी-अभी पानी पिया था, शायद कोई चीज़ निगल गया।

याशा (तिरस्कारपूर्वक): गंवारपन...

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना: हम चले जायेंगे और यहां कोई भी नहीं रह जायेगा...

लोपाखिन: वसन्त तक।

वार्या (बंडल में से इतने ज़ोर से छाता निकालती है कि ऐसे प्रतीत होता है मानो किसी को मारना चाहती हो। लोपाखिन ऐसे ज़ाहिर करता है मानो डर गया हो): डर किसलिये गये, किसलिये ... मेरा ऐसा कोई इरादा नहीं था।

त्रोफ़ीमोव: चलिये, चलकर बग्घी में बैठें ... वक़्त हो गया! जल्द ही गाड़ी आ जायेगी!

वार्या: पेत्या, ये रहे सूटकेस के पास आपके गलोश। **(आंसू भरकर)** उफ़, कितने गन्दे, कितने पुराने हैं ये ...

त्रोफ़ीमोव (गलोश पहनकर): तो आइये, अब चलें।

गायेव (अत्यधिक विह्वलता अनुभव करते और इस बात से डरते हुए कि कहीं रुलाई न आ जाये): गाड़ी ... स्टेशन ... बीच के गेंद को मारो, सफ़ेद को कोनेवाली पाकेट में डालो ...

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना: आइये, चलें!

लोपाखिन: सभी यहां हैं न? वहां तो कोई नहीं रह गया? **(बायीं ओर के बग़लवाले कमरे में ताला लगाता है)** सारी चीज़ें तो यहीं हैं, इसलिये इसे तो ताला लगाना ही चाहिये। आइये, चलें! ..

आन्या: विदा घर! विदा, पुरानी ज़िन्दगी!

त्रोफ़ीमोव: स्वागत, नयी ज़िन्दगी! .. **(आन्या के साथ जाता है)**

(वार्या कमरे में सभी ओर नज़र दौड़ाती है और धीरे-धीरे बाहर जाती है। याशा तथा कुत्ते के साथ शर्लोत्ता भी बाहर जाते हैं)

लोपाखिन: तो मतलब यह कि वसन्त तक के लिये विदा। चलिये, बाहर चलिये ... फिर भेंट होने तक विदा! .. **(जाता है)**

(ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना और गायेव ही रह जाते हैं। ये दोनों मानो इसी की प्रतीक्षा में थे, एक-दूसरे के गले लगकर इस कारण धीरे-धीरे, घुटी-घुटी आवाज़ में सिसकते हैं कि किसी और को उनकी सिसकियां सुनाई न दे जायें)

गायेव (हताशा से): मेरी बहन, मेरी बहन ...

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना: ओ मेरी प्यारी, मेरी अनूठी, मेरी सुन्दर चेरी की बगिया! .. मेरी ज़िन्दगी, मेरी जवानी, मेरी ख़ुशी, विदा! .. विदा! ..

(आन्या ख़ुशीभरी आवाज़ में पुकारती है: "अम्मां! .." त्रोफ़ीमोव का उल्लास और उत्साहपूर्ण स्वर: "हो-हो! ")

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना: आख़िरी बार दीवारों और खिड़कियों पर नज़र डाल लूं ... मेरी दिवंगता मां को इस कमरे में इधर-उधर टहलना बहुत अच्छा लगता था ...

गायेव: मेरी बहन, मेरी बहन! ..

(आन्या की आवाज़: "अम्मां! " त्रोफ़ीमोव की आवाज़: "हो-हो! ")

ल्युबोव अन्द्रेयेव्ना: हम आ रहे हैं! ..

(बाहर जाते हैं)

(मंच खाली रह जाता है। सभी दरवाज़ों के ताले बन्द करने और उसके बाद बग्घियों के जाने की आवाज़ें सुन पड़ती हैं। निस्तब्धता छा जाती है। इस नीरवता में पेड़ पर कुल्हाड़ी चलने की घुटी-घुटी, एकमात्र और उदासीभरी आवाज़ सुनाई देती है।

किसी के पैरों की आहट होती है। दायीं ओर के दरवाज़े पर फ़ीर्स नज़र आता है। वह सदा की भांति कोट और सफ़ेद जाकेट पहने है, उसके पैरों में स्लीपर हैं। वह बीमार है)

फ़ीर्स **(दरवाज़े के पास जाकर उसकी हत्थी को छूता है) :** ताला लगा है। सब चले गये ... **(सोफ़े पर बैठ जाता है)** किसी को भी मेरा ध्यान नहीं रहा ... ख़ैर, कोई बात नहीं ... मैं थोड़ी देर यहां बैठता हूं ... लेओनीद अन्द्रेयेविच ने तो, शायद फ़र-कोट नहीं पहना होगा, हल्के कोट में ही चले गये होंगे ... **(चिन्ता से गहरी सांस लेता है)** मैंने भी ध्यान नहीं किया ... जवान लोग कुछ नहीं समझते ! **(कुछ बड़बड़ाता है जो समझ में नहीं आता)** जीवन तो ऐसे बीत गया मानो जिया ही नहीं। **(लेट जाता है)** थोड़ी देर लेट लेता दूं ... तन में जान तो रही नहीं, कुछ भी नहीं रहा, कुछ भी ... अरे ओ ... बौड़म ! ..

(कहीं दूर से, मानो आकाश से कोई तार टूटने की दर्दीली आवाज़ सुनाई देती है जो धीरे-धीरे लुप्त हो जाती है। गहरा सन्नाटा छा जाता है और उसमें दूरी पर बगिया में पेड़ पर कुल्हाड़ी चलने की ही आवाज़ सुनाई देती रहती है)

(परदा गिरता है)